सीमाक ओहि पार

सीमाक ओहि पार

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 9789353467289
दाम : 250रूपया

पहिल संस्करण : 2019

लेखक एवम् प्रकाशक : रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
Phone: 01202343563

सीमाक ओहि पार

A Maithili Novel
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



हमर ससुर स्वर्गीय गणेश झा (पण्डौल डीहटोल)क

स्मृतिमे

ई पोथी सादरससिनेह समर्पित !

रबीन्द्र

दू आखर

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल। एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव समय-समय पर भेटैत रहल अछि । संगहि हमर भातिज श्री राज किशोर मिश्र(आइ.इ.एस), चीफ जेनेरल मैनेजर(सीजेएम) ,बीएसएनएल हमर पुस्तकसभकेँ मनोयोग पूर्वक पढ़ि बहुत रास रचनात्मक सुझाव दैत रहलाह । हमर अनन्य मित्र श्री ओम प्रकाश सपरा,श्री मदन मोहन सिन्हा, एवम् श्री संजीव सिन्हा हमरा लिखबाक हेतु निरंतर उत्साहित करैत रहलाह । हिनकासभकेँ हार्दिक धन्यवाद ।

आशा अछि जे पाठक लोकनिकेँ ई पुस्तक पसिन पड़तनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

1/1/2019

सीमाक ओहि पार

चारूकात मनोरम दृश्य छल । हरिअर कंचन नाना प्रकारक फूल-फलसँ सजल-धजल। पैर धरिते लागल जेना सभ दुख हेरा गेल । आश्चर्य लागए जे एतए कोना आबि गेलहुँ? सभकिछु नव लागि रहल छल । सभसँ विचित्र बात तँ ई रहैक जे जएह सोचिऐक सएह होबए लागैक । मोन भेल जे किओ परिचित भेटि जाइत जाहिसँ एहिठामक हिसाब-किताब बुझबामे मदति होइत । मोन लगैत। एकबेर व्यवस्थित हेबाक बात छैक। तकर बाद कोनो चिंता नहि । एतेक सुख सुविधा एहिठाम स्वतः सुलभ अछि । नीकसँ समय कटतैक। से सभ सोचिते रही कि देखैत छी जे किओ हमरे दिस आबि रहल छथि । नमगर-पोरगर, देखबामे बेस भव्य । हमर समवयस्के बुझाइत छलाह । लग अबिते कहैत छथि –

“मनोज! मनोज !”

किओ हमर नाम लए चिकरि रहल छलाह । अकस्मात उमहर ध्यान गेल । ताबे ओ लगमे आबि गेल रहथि । कहैत छथि-

"हमरा चिन्हलहुँ? हमछी अहाँक इसकूलिआ दोस्त-शरद।"

"सएह कहू । चिन्हब किएक नहि । "

" एकटा समय रहैक जे हम-अहाँ दिन-राति संगे रही । संगे खेलाइ, संगे खाइ । समय-समयक बात होइत छैक । एहिठाम कहिआ अएलहुँ?”

"आबिए रहल छी । सोचिते रही जे किओ अपन लोक भेटि जइतथि तँ कनी मदति भए जाइत ।"

"भाइ! एहिठाम ककरो, कोनो मदतिक काज नहि पड़त । सभटा अपने भए जाएत ।"-हम हुनकर बात सुनि कए आश्वस्त भेलहुँ ।

हमरा दुनूगोटेक गप्प चलिए रहल छल कि कानमे मधुर संगीत सुनाएल । विद्यापतिक गीत आ एहिठाम? हम तँ आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ । ताबे गीतक स्वर आओर फरिछा गेल छल-

" के पतिआ लए जाएत रे मोरा प्रियतम पास...."

गेनिहारसभक सौंदर्य देखैत बनैत छल । एहन मनोरम दृश्य साइते देखाइत अछि । हमर मोनमे उठैत शंकाकेँ शरद तारि गेलाह । कहैत छथि -

" भाइ! अहाँ अपसिआँत किएक छी? अखन की देखलिऐक अछि। आगू बहुत किछु देखबैक । एहिठाम आएब सभक वशक नहि आछि,मुदा जे आबि गेल तकरा सुखे-सुख छैक। जे चाही,जतेक चाही,जखन चाही सभ सुलभ छैक । एतए सुख-सुविधाक अंबार छैक ।"

ताबतेमे देखैत छी जे एकझुंड एक सँ एक सुंदर कन्यासभ नाचि-गाबि रहल छथि । सामनेमे बड़ीटा सामिआना ओछाओल अछि । ओहिपर बहुत रास गणमान्य लोकसभ बैसल आनंदित भए रहल छथि। गीत गबैत-गबैत कन्यासभ बेसुधि छथि । सामिआनामे बैसल श्रोतागण बीच-बीचमे थपड़ी पीटि रहल छथि। कै बेर कै गोटे गीतक मधुरध्वनि सुनिकए आवेगमे उठि जाइत छथि आ बिना कोनो रोक-टोककेँ कन्यासभक संगे नृत्य करए लगैत छथि। हम तँ ओहि लोकमे नवागन्तुक रही । हमरा लेल सभ किछु

अप्रत्याशिते छल । एहन रमनगर गीत,एहन सुंदर-सुंदर कन्या लोकनि आ मदमस्त श्रोतागण, संपूर्ण वातावरणकेँ जीवंत केने छल।

" ई तँ अद्भुत स्थान लागि रहल अछि । हमसभ छी कतए? एकर की नाम छैक?-हम पुछलिअनि।

"ई थिक दिव्यलोक ।"-शरद बजलाह ।

"से की?"

" देखिए रहल छिऐक । किछु दिनमे अपने सभटा बुझि जेबैक । अहिठाम मृत्युक बाद पुण्यात्मासभकेँ स्थान भेटैत अछि ।"

"मुदा एहिठाम सभकेँ तीनटा आँखि देखि रहल छी।"

"तेसर आँखि छैक अन्तरदृष्टि । मृत्युलोकमे से सामान्यतः बंद रहैत छैक। एहिठाम ओ स्वतः सक्रिय भए जाइत अछि ।"

"तेसर आँखि तँ महादेवकेँ होइत छनि।"

"हुनकर तेसर आँखि खुजब तँ बिनाशकारी होइत अछि । जखन संहार करबाक होइत छनि तँ ओकरा खोलैत छथि । मुदा एहिलोकक तेसर आँखि तँ अद्भुत अछि । एकरा रहलासँ सभ भेद-विभेद समाप्त भए जाइत अछि । देखैत नहि छिऐक, केना सभ अपनेमे मगन अछि।"

"ओ! ई तँ बहुत नीक बात अछि ।"

गप्पक क्रममे हमर ध्यान रागिनीपर चलि गेल ।

"हमरा किछु कहलहुँ?-रागिनी बजलीह। औ बाबू! हम की बजितहुँ । हम तँ अबाक रहि गेलहुँ । सोचनो ने रहिऐक जे एना मोनमे अबिते देरी ओ हाजिर भए जेतीह । हम तँ दंग रही ।

"हम तँ अहींक बारेमे सोचैत रही ।"

" तैँ ने हम आबि गेलहुँ ।"

"मुदा अहाँ रही कतए?"

ओ हमर मुँह बकर-बकर ताकए लगलीह । कहबी छैक जे जीबी तँ की-की ने देखी । मुदा एहिठाम तँ उल्टे बात देखि रहल छी । मरी तँ की-की ने देखी से चरितार्थ भए रहल अछि।

रागिनीसँ फेरो कहिओ भेंट होएत से तँ सपनोमे नहि सोचने रही । मुदा हुनकर स्मृति ओहिना बनल रहए। आश्चर्यक गप्प ई अछि जे दिव्यलोकमे अएलाक बाद मृत्युलोकक बातसभ ओहिना मोन अछि । एकटा समय छल जे रागिनी आओर हम एकहु क्षण लेल फराक नहि होइ। इसकूल जेबाक लाथे घरसँ विदा होइ । रस्तामे कहिओ गामक बाहर इनारपर,कहिओ कलममे आ कहिओ धारक कातमे हमसभ बैसल गप्प मारैत रहैत छलहुँ । ने भूख, ने पिआस। बस रागिनीक संगे रमल रही । कै दिन ओ आबएमे विलंब कए देथि । बाट तकैत-तकैत हालत खराप रहैत छल । रागिनी छोड़ि किछु आओर नीक नहि लगैत छल । हुनकर पैघ-पैघ आँखि,चाकर ललाट,गोर-नार,नमगर हाड़-काठ देखैत बनैत छल । हुनका देखितहि पढ़ाइ-लिखाइ सभ बिसरा जाइत छल । ई बात कतेक दिन जाँतल रहितैक? इसकूलक मास्टरसभकेँ पता लगलैक । काने-कान गामक लोकसभकेँ सेहो पता लगलैक । आ शुरु भेल हमरसभक विपत्तिक शृंखला ।

बहुतरास बितलाहा बातसभ मोन पड़ए लागल । केना एकदिन हम आ रागिनी कानमे मोबाइल लगओने गीत सुनैत रेलवे फाटक पार करैत काल तेजसँ चलैत ट्रेनक चपेटमे आबि गेल रही। अपनो आश्चर्य होअए जे एतेक दिन बितलाक बादो ओ घटनासभ ओहिना तहदर्ज अछि ,लगैत अछि जेना काल्हिएक गप्प छैक । फेर भेल जे बीतल बातसभमे की राखल छैक? जखन एहिठाम

आनंदक एतेक सामग्री स्वतः सुलभ अछि तँ किएक नहि ओहीमे रमि जाइ ।

-2-

दिव्यलोकमे दिन-राति नहि होइत छल । सभ समय एकहि रंग, जकरा जखन मोन भेल जागि गेल,जखन मोन भेल सुति रहल। जे मोन होअए से खाउ,चीज-वस्तुक अंबार लागल रहैत छल । आम,दारिम,समतोला, सेव ,अंगुर चारुकात पथार लागल रहैत छल । खेनहारे नहि । मधुरक तरह-तरहक व्यंजनसभ यत्र-तत्र राखल छल । एतेक रास चीज-वस्तु कतएसँ आबैक,के बनाबइ किछु पता नहि चलि रहल छल । ई हमरा नहि बुझएमे आबए जे एहिठामक लोकसभ कोन एहन नीक काज केलाह जे एहन सुख-सुविधा भोगि रहल छथि? हम सएह सोचि रहल छलहुँ कि रागिनी सामनेमे ठाढ़ि भेल हँसि रहल छलीह -

"सएह कहू, अहाँक आदति कनीको सुधरल नहि । ऐहूठाम अहाँ माथापच्चीमे लागल रहैत छी । ककरो एना देखैत छिएक?"- से कहि ओ जोरसँ हमर हाथ झिकलथि आ हमरा लेने आगू बढ़ि गेलीह ।

हमसभ गप्प करिते रही कि एकटा जहाज उतरलैक । रागिनी ओहि जहाज दिस बढ़ि गेलीह । जहाजक फाटक खुजल आ ओहिमेसँ शरद बहरेलाह । शरद रागिनीकेँ देखिते हँसैत छथि आ इसारासँ अपना दिस बजबै छथि । दुनूगोटे ओहि जहाजमे बैसि जाइत छथि आ जहाज उड़ि जाइत अछि । ई सभ घटना ततेक जल्दीमे भेलैक जे हम ठामहि सभकिछु देखैत रहि गेलहुँ ।

हमरा तँ ठकविदोर लागि गेल । किछु फुरेबे नहि करए । एसगरे ओहिठाम जस-के-तस ठाढ़ रही कि अंतरिक्षमे बड़ी जोर आवाज भेलैक ।

“जरुर कोनो नव घटना घटल अछि"- चारुकात बौआ रहल आत्मासभ सोचि रहल छल। एहि आत्मासभक खुबी छलैक जे ओकरासभकेँ ककरो समाद देबाक हेतु कोनो फोनक काज नहि पड़ैत छलैक। इच्छा करु आ ओहि आत्मासँ सोझे संपर्क भए जाएत। ततबे नहि, जखन जतए चाहथि उड़ि जाथि । कोनो सबारीक काज नहि पड़ैत छलनि ।

थोड़बे कालमे आकाशवाणी भेल-

"तोरा अखन धरि पुरनका आदतिसभ नहि छुटलह अछि। तेँ परेसानीमे पड़ि जाइत छह।"

"एहिमे हमर कोन दोख? हमर मोनमे ओएह बातसभ घुमि रहल अछि । रागिनी तँ हमरा बहुत मानैत छलीह, बहुत आवेशसँ हमरा लग अएबो केलीह आ बिना किछु कहने चलि गेलीह। कहि नहि कतए गेलीह?"

“ऊपर दिस देखहक ।”

"हमरा तँ किछु नहि देखा रहल अछि।"

"एना तँ नहि हेबाक चाही। अहाँक तेसर नेत्र लगैत अछि सक्रिय नहि भए रहल अछि नहि तँ एहन प्रश्न नहि पुछए पड़ैत ।"--से कहि ओ आवाज लुप्त भए गेल । कतहु किछु नहि देखा रहल छल । ऊपर, नीचा, सौंसे देखबाक प्रयास केलहुँ । हम ऊपर तकैत रही, किछु-किछु सोचैत रही आ चलितो रही । परिणाम भेल जे हमर पैर कोनो पिच्छर स्थानपर पड़ि गेल आ हम पिछड़ि कए खसि गेलहुँ । किछु नहि बुझि सकलिऐक जे केमहर जा रहल छी ।

चारूकात अन्हार गुज्ज रहैक । बीच-बीचमे कैठाम किछु-किछु आबाज सुनबामे आबए। संभवतः मृतात्माक आवागमन भए रहल छल । खसैत-खसैत हम एकटा पहाड़क टीलापर अड़कि गेलहुँ । ओतए किछुगोटे पहिने सँ हमर प्रतीक्षा कए रहल छलाह । किछु- किछु कहए चाहलाह। हुनकर भाखा हमरा किछु बुझएमे नहि आबए । हम ओकरा दिस तकैत रही आ ओ सभ हमरा दिस। ओ सभ आपसमे किछु गप्प केलक । ओहिमेसँ एकगोटे मैथिलीमे बाजल-

" अहाँ बहुत थाकल लगैत छी । किछु जलखै कए लिअ ने । फेर घुमैत रहब । "

"ठीक छैक ।"

ओ हमरा एकटा बड़का भोजनालयमे लए गेलाह जतए तरह-तरहक जलखै राखल छल । जे खाउ,जते खाउ कोनो रोक-टोक नहि । ओहिठाम बहुत रास लोकसभ रहैक मुदा ककरो भाखा बुझबे नहि करिऐक । सभ अपन-अपन पसिनक जलखै करबामे मस्त छल। जलखै केलाकबाद हमरा औंघी लागए। ई बात ओ बुझि गेलाह आ हमरा लेने-लेने एकटा कोठरीमे पहुँचा देलाह । ओहिठाम सुतबाकसभ व्यवस्था छलैक । हम ततेक थाकल रही जे ओतए जाइते निन्न पड़ि गेल ।

-3-

निन्न टुटतहि बीतल बातसभ मोन पड़ए लागल । हमर गाम छल मौजपुर । मौजपुर गाम के नहि जनैत छल । किएक? एहि लेल नहि जे ओहि गाममे बहुत पढ़ल-लिखल लोक छल,एहि लेल नहि जे ओतए कोनो बहुत धनीक लोकसभ छलाह । असलमे ओ गाम इलाकामे आपसी सौहार्द्यक हेतु प्रसिद्ध छल । गाममे सभ जातिक लोक बसैत छलाह मुदा करवनो लगबे नहि करैत जे एतेक जातिक लोक एकहिठाम एतेक नीकसँ रहि रहल छथि । सभ मिलल रहैत छल जेना नून पानिमे मिलि जाइत अछि । जहिआक दाहा होइत तहिआक सौंसे गाम दाहापर अपन कबुलाक बद्धी चढ़ाबैत,हाटपर साँझमे दाहासभक मिलान देखैत,लाठी भजैत युवकसभक मनोरंजन देखैत । की हिन्दू,की मुसलमान सभ अपन जोर अजमाइस करैत। लगबे नहि करैत जे ई कोनो तरहेँ दोसर धर्मक पाबनि अछि । तहिना कृष्णाष्टमी,रामनवमी आ दुर्गापूजामे मुसलमानो पाछा नहि रहैत । जकरा जे काज देल जाइत से सहर्ष करैत ।

गाममे एक सँ एक लोक रहैत छलाह । ओहिमे तिरपितक अलग पहिचान छलनि । नेनामे बहुत कष्ट सहलनि । हुनकर पिताकेँ जथापात नहि छलनि । बहुत मोसकिलसँ गुजर होइत छलनि । मुदा तिरपित बहुत संस्कारी आ परिश्रमी छलाह । दिन-राति मेहनति कए आइए धरि पढ़लाह । तकरबाद गामेक इसकूलमे मास्टरी करए लगलाह । इसकूल बाद जे समय बचि जाइत छलनि

ताहिमे गामक गरीब बच्चासभकेँ पढ़बैत छलाह,ततबे नहि ओकरासभकेँ किताब,काँपीक व्यवस्था धरि ओएह कए दैत छलाह। कै बेर घरनी टोकथिन-

"एना तँ अहाँ हमरासभकेँ भिखमंगा बना देब ।"

" एहि प्रतिभाशाली नेनासभकेँ आश्रय देबासँ बढ़ि कए कोनो पुण्य नहि भए सकैत अछि । धन होइत छैक कथी लेल?"

"एहिना कबाइत पढ़ैत रहू । जखन दिक्कत होएत तँ किओ काज नहि आओत । ई ओएह गाम छैक जतए हमसभ कतेको राति पानि पीबि सुति जाइत छलहुँ आ लाजे ककरो किछु नहि कहि पबैत छलहुँ । ताहिठाम अहाँ सदावर्त बाँटि रहल छी।"

आओर तिरपित हँसिकए बातकेँ टारि दैत छलखिन । ओ बजैत-बजैत अपने चुप भए जइतथि । तिरपितपर कोनो असर नहि होइत छलनि ।

हम,शरद आ रागिनी नियमित ओहि इसकूल जाइत छलहुँ। गामक पछबरिआ कात एकटा पैघ पाकड़िक गाछ छलैक। ओकरे औढ़मे इसकूल चलैत छल । एकमात्र शिक्षक तिरपित भोरसँ साँझ धरि लागल रहैत छलाह । इसकूलकेँ क्रमशः इलाकामे प्रचार होइत गेलैक। गाम-गामसँ विद्यार्थीसभ जुटए लागल । मुदा ओतए साधनक नामपर किछु नहि छलैक ,एकटा चारो नहि । एतेक संघर्षकए नेनासभक भविष्य निर्माण हेतु तिरपितकेँ कहिओ चिंतित नहि देखलिअनि,निरंतर प्रशन्न रहितथि । के की कए रहल अछि,के की कहि रहल अछि ताहिसभसँ किछु लेना-देना नहि रहैत छलनि । अपन काज सँ मतलब रखैत छलाह,अपना आपमे मगन रहैत छलाह ।

हुनकर प्रयाससँ कतेको नेनासभ गामक इसकूलसँ जुड़ल। जीवनमे आगा बढ़ल । नौकरी करबाक हेतुगाम छोड़ि-छोड़ि शहर दिस चलि गेल । गाममे झर सभ रहि गेल जे नित्य नाना प्रकारक फसाद करैत रहैत छल । ओहीक्रममे तिरपितपर ओ सभ आक्रामक भए गेल छल। ओना तिरपित ततेक सम्हारि कए चलएबला लोक छलाह जे ककरो हाथ नहि लागथि । मुदा रागिनीक प्रसंग हुनका बेबस कए देने छल ।

तिरपित एहि इसकूलकेँ स्थापित करबाक हेतु दिन-राति लागल रहलाह । सरकारी अधिकारीसभकैँ कतेको दर्खास्त देलाह। मुदा किछु नहि भेल । हारि कए पाँच कट्ठा खेत बेचिकए ओ इसकूल भवनक निर्माण केलाह । शुरुमे तीनटा कोठरी बनल। दू टा पक्का आ एकटा फूसक । तकरबादो बहुत रास विद्यार्थीसभ गाछक छाहरिमे पढ़थि । इसकूलमे आस-पासक तीनटा आओर शिक्षक स्वेच्छासँ योगदान देबए लगलाह ,एहि उमीदमे जे आइ-ने-काल्हि हुनकासभकेँ सरकारी नौकरी भए जेतनि । कालक्रमे सेहो भेलैक । इसकूलकेँ सरकारी मान्यता भेटलैक । ओहिमे स्थानीय नेता श्यामक बहुत योगदान रहनि । ओ आ तिरपित कतेको दिन लागि कए एहिकाजकेँ करओलाह । इसकूलक काज आगा बढ़िते गेल । क्रमशः ओतए आओर कोठरीसभ बनल । माध्यमिक विद्यालयसँ बढ़िकए ओ उच्च विद्यालय भए गेल। इलाकामे ओहि इसकूलक नाम पसरि गेल । नीक-नीक विद्यार्थीसभ ओहि इसकूलमे नाम लिखाबक हेतु प्रयत्नशील रहैत छलाह । जरवन नीक विद्यार्थी रहतैक तँ परीक्षाफलो नीक हेतैक। सएह होबए लागल । एहि प्रयासक सफलतासँ तिरपितकेँ समाजमे बहुत यश भेल ।

रागिनीक पिता तिरपित बहुत यत्नसँ अपन एकमात्र संतानक पालन-पोषण करैत छलाह। हमर पिता प्रभु हुनके ओहिठाम हर जोतैत छलाह । कतेको दिन हम हुनकासंगे खेतपर चलि जाइ । कै दिन तिरपितक ओहिठाम सेहो बाबूकसंगे चलि जाइ। मुदा हम ई बात नहि बुझिऐक जे रागिनीक संग गप्प-सप्प एतेक गहींर आ रसगर भए जाएत । मुदा से भेल । क्रमशः नेन्नेसँ रागिनीक हमरासँ आकर्षण रहैक जे बढ़िते गेल । जखन तिरपित इसकूल चलबए लगलाह आ गामघरक नेना सभकेँ पकड़ि-पकड़ि कए ओहिमे लए जाए लगलाह,तँ हमहु इसकूलक मुँह देखलहुँ । ओहिसँ पहिने इसकूल की होइत छैक से सुननो नहि रहऐक ।

इसकूलमे पहिले दिन रागिनी हमरा देखिते पाछा पड़ि गेलि। हमहु तँ नेन्ने रही । ओकरासंगे खेलाइत-खेलाइत दिन बीत गेल । दोसर दिन जखन अहिना समय बितैत रहए तँ तिरपितक ध्यान ओमहर गेलनि । रागिनी आ हमरा दुनू गोटेकेँ बैसा कए किछु पढ़बए लगलाह। हुनका एहिबातसँ प्रशन्नता रहनि जे रागिनीकेँ इसकूलमे मोन लगैत छनि । कै बेर रागिनी हमर सभसबक बना देथि जाहिसँ हम मारिसँ बचि जाइ । कै बेर हम हुनकर काज कए दिअनि । एहि तरहेँ हमरसभक पढाइ चलैत रहल ।

इसकूलमे हमरसभक दोस्तीपर सभसँ पहिने शरदक ध्यान गेलैक । भेलैक ई जे टिफिनक समयमे हम दुनूगोटे गाछतर बैसल गप्प करैत रही कि शरदकेँ किछु विद्यार्थीसभसँ झगढ़ा होबए लगलैक। किछुगोटे ओकरा पीटि रहल छल तँ किछु गोटे बचा रहल छल । मुदा बदमाससभ ओतहि नहि रूकल । ओ सभ रागिनीकेँ देखितहि अड़-बड़ बाजए लागल । ताहिपर हमरा बहुत तामस भेल। हम ओकर गट्टा पकड़ि कए पटकि देलिऐक । ताबतेमे

आओर बच्चासभ दौड़ल । हल्ला सुनि तिरपित सेहो अएलथि । कहुना कए मामला शांत भेल ।

तकरबाद सभक ध्यान एमहर-ओमहर भए गेल । मुदा शरद तकरबादसँ नित्य टिफिनकालमे हमरासभक लगीचमे आबि जाइत। अपनाभरि रागिनीक ध्यान आकर्षित करबाक प्रयास करैत,मुदा ओ सुनबे नहि करैक । एहिबातसँ शरदक मोनमे बहुत तामस भेलैक आओर ओ तहिएसँ रागिनीसँ बदला लेबाक फिराकमे पड़ि गेल ।

-4-

शरदक पिता श्याम ठीकेदार छलाह । सरकारी व्यवस्थाकेँ अपना हितसाधन हेतु उपयोग करबामे ओ माहिर छलाह । क्रमशः हुनकर प्रभाव बढ़ैत गेल । ओ क्रमशः बड़का नेता बनि गेलाह। अपन गाम लखनपुरमे कमे काल रहैत छलाह मुदा जखन कखनो अबितथि तँ ओहिठाम लोकक करमान लागल रहैत छल । लखनपुर आओर मौजपुर आसेपास छल । बहुत लोकक काज ओ करबा दैत छलखिन,जकर नहि होइत छलैक तकरो बोल-भरोस दए पोटने रहैत छलाह । तैँ हमरो गामक बहुत रास लोकसभ हुनकर प्रशंसक छल । कहब जे कोनो निःशुल्क किछु करैत छलखिन से बात नहि । तैओ लोक हुनकर व्यवहारसँ खुश छलाह । कोनो परेसानी भेलापर हुनके लग जाइत छल । जँ काज नहि होएत तँ टाका बुड़त नहि । आपस कए दैत छलखिन । एहिबातसँ हुनकर गणना इमान्दार लोकमे होइत छल । फेर घी हेराएल तँ कतए?

मौजपुरमे इसकूलक स्थापनाक बाद कतेको युवककेँ सरकारी,निजी काज ओ धरबैत रहलाह ।

शरद अपन पिताक एकमात्र संतान छलाह । श्यामक इच्छा रहनि जे ओ पढ़ि लिखि पैघ आदमी बनथि जाहिसँ हुनकर यश बढ़नि । मुदा शरदक लक्षण तेहन नहि रहनि । इसकूल जेबे नहि करथि आओर जँ जेबो केलाह तँ किछु-ने-किछु फसाद बेसाहि लेथि । शिक्षकोसभ बेसी किछु नहि कए पाबथि ।

एकदिन शरद इसकूलमे खेलक घंटीमे रागिनीक बाँहि पकड़ि लेलक । किछु-किछु ओकर कानमे फुसफुसेबो कएल । रागिनीक तामस देखैत बनैत छल ।

" तूँ दोबारा एहन गलती करबैँ तँ ठीक नहि हेतौक ।" - रागिनी बाजल ।

" दिनभरि मनोजसंगे हँसी ठठ्ठा करैत रहैत छैँ से किछु नहि आ हम कनीक टोकि देलिऔक तँ कोन जुलुम भए गेलैक? "-शरद बाजल ।

"बेसी तंग करबैँ तँ हम मास्टर साहेबकेँ कहि देबैक ।"

"कहि दही । ओ हमरा की कए लेताह? "

रागिनी कनैत मास्टर साहेब लग पहुँचि गेलि । मास्टर किओ आन नहि तिरपित छलाह। ओ सभ बात बुझिओ कए शरदकेँ किछु कहए नहि चाहथि । मुदा चुपो नहि रहल भेलनि । आखिर ओ शरद कैँ बजओलथि । तिरपित किछु कहथिन ताहिसँ पहिनहि ओएह बाजए लागल-

" हम तँ ओकरा बुझेबाक प्रयास कए रहल छलहुँ जे ओकर दिन-राति मनोज संगे रहब उचित नहि अछि । एहिसँ ओकर छवि खराप भए रहल छैक । तँ उल्टे हमरे सिकाइत करए आबि गेलि ।"

आसपास ठाढ़ कैटा विद्यार्थी ओकर बातक समर्थन केलक। बात बढ़ैत गेल आओर श्याम सेहो एहि विवादमे कुदि पड़लाह ।श्याम प्रभावशाली व्यक्ति छलाह ।हमर पिताक हुनका आगू की औकात छलनि । ओ हुनका अपना ओहिठाम बजा कए कहलखिन-

"अपन बेटाक समाचारसभ बूझल छौ कि नहि?"

"इसकूल जाइत छैक । दिन-राति पढ़ाइमे लागल रहैत छैक ।मुदा हम तँ कितोबो नहि जुटा पबैत छिऐक, सभटा तिरपित बाबू करैत छथिन ।"

"चुप रह ।पढ़ाइ करैत छैक ।ओ नमरी गुण्डा भेल जाइत छौक ।"

"ऐँ!"

"तेहन भगल कए रहल अछि जेना एकरा किछु बूझले नहि होइक ।"

"हमरा सहीमे किछु नहि बूझल अछि ।"

"इसकूलसँ अपन बेटाकेँ निकालि ले नहि तँ बरबाद भए जेतौक ।सौंसे गाममे बात पसरि गेल अछि ।असगर हम कतेक बचा सकबौ?"

श्यामक बाद सुनितहि हमर बाबू बहुत परेसान भए गेलथि।हुनका हमरा खिलाफ कहल गेल एक-एक शव्द वज्र जकाँ लगलनि ।छातीमे दर्द उठल ।हुनका जोरसँ हृदयाघात भेल ।ओ धराम दए खसलाह ।जाबे किओ किछु बुझैत,किछु करैत ओ गुजरि गेलाह ।कनीके कालक बाद हुनकर लहास आङनमे पड़ल छल ।

ब्रह्मस्थानमे सौंसे गामक लोकसभ जमा भेल रहथि । एकदिस लखनपुरक लोकसभ बैसल छलाह तँ दोसर दिस मौजपुरक । दुनूगाम इलाकाक सुभ्यस्त गाममे मानल जाइत छल। बेसीलोकसभ नौकरी करैत छलाह । बाहरे रहैत छलाह । कहिओ-काल,पाबनिए-तिहारे गाम आबथि नहि तँ नहिओ आबथि । गामसभमे बेसी बूढ़ आ बच्चासभ देखाइत। गामक युवकसभ बहरिआ भए गेल छल । तेहन परिस्थितिमे तिरपित अपन परिवारकेँ संगे गामेमे रहैत छलाह । गुजर जोगर खेत -पथार रहनि। शांतिपूर्वक समय बिता रहल छलाह । मुदा ई कांड हुनकर जीवनकेँ हिला कए राखि देलक । सभटा व्यवस्था गड़बड़ा गेल । ओहिदिनक बैसारमे दुनूगामक लोक एकस्वरसँ बजलाह-

"रागिनीकेँ मनोजक संग एहि तरहे मेल-जोल गामक प्रतिष्ठाक खिलाफ अछि । हिनकासभकेँ गाममे रहक होनि तँ सुधरथि, नहि तँ गामसँ बाहर कएल जाथि ।"

तकरबाद जे भेल से फेरसँ बाजक मोन नहि करैत अछि। सुनबै तँ बहुत दुख होएत । चलू,कहिए दैत छी । देखलहुँ जे रागिनीक पिता तिरपित ओकर झोटा पकड़ने घिचने जा रहल छथि।

"नाक कटा देलैं। "

" बाबू! हमर किछु अपराध नहि अछि । "

"चुप रह कुलटा नहितन।"

"हम किछु गलत नहि कए रहल छी । लोकसभ अनेरे हमर पाछा पड़ि गेल अछि ।"

" तोरा तँ लाज-धाख छौक नहि । पीबि गेलैं धो कए सभटा। मुदा हमसभ एहि समाजमे छी आ रहब । बुझलही कि नहि? नीकसँ सुनि ले । नहि तँ... ।"

तिरपित रागिनीकेँ कोठरीमे पटकि बाहरसँ तालाबंद कए अड़बड़ बजैत खुरपी लेने खेतपर चलि जाइत छथि। रागिनी असगर घरमे चिकरि रहल छथि । केबारक पाछा हुनकर माए ठाढ़ि छथि । ओहो कानि रहल छथि मुदा लाचार छथि । तिरपित किछु नहि सुनि रहल छथिन। ओ एहिपार-ओहिपार करए हेतु तैयार छथि। माएक एहि व्यथाकेँ किओ बुझनाहर नहि अछि । रागिनीक करुण क्रंदन करैत रहि गेलि ।

-6-

दिव्यलोक सर्व संपन्न छल । एतए सभकिछु स्वचालित छल । नवागन्तुककेँ अबितहि परिचयपत्रसँ लए कए समस्त सुख-सुविधाक व्यवस्था स्वतः भए जाइत छल । मुदा हमर अहिलोकमे अएला कै दिन भए गेलाक बादो ने परिचयपत्र बनल,ने रहबाक कोनो ठेकान छल । ई बात अलग छैक जे हमरा कोनो कष्ट नहि भए रहल छल । कारण दिव्यलोकमे ठाम-ठाम चौबटिआसभपर चीज-वस्तुक भरमार रहैत छल ,ओहिना जेना कोनो नीक क्लबमे होइत अछि । तकर ऊपरो व्यवस्था रहैत छलैक जकर तुलना मृत्युलोकमे रहनिहार नहि कए सकैत छथि,ओ सोचिओ नहि सकैत छथि जे एहनो होइत छैक। इएह थिक मृत्युलोक आ दिव्यलोकक अंतर ।

मुदा दिव्यलोकमे लोक अबैत अछि कोना? की ओ सभ पुण्यात्मा छथि? की ओ सभ ककरो कृपापात्र छथि ? की एतहु हेराफेरी चलैत छैक? किछु नहि कहि सकैत छी कारण हम स्वयं एतए नव छी । एहिठामक तालपातरा बुझबामे किछु समय तँ लगबे करत ।

हम से सभ सोचिते छलहुँ कि आगूमे एकटा चिट्ठी आ एकटा छोटसन पिपही राखल देखाएल । चिट्ठी पढ़ए लगैत छी ।

" तोहर मृत्युलोकक फाइल हरा गेल अछि, तेँ तोहर विषयमे निर्णय लेबामे विलंब भए रहल अछि । जाबे किछु फैसला नहि होइत अछि ताबे एहि पिपहीकेँ सम्हारि कए राखह। एकर बटन दबेलासँ समस्याक समाधान होइत रहतह ।"

"मुदा हमरा बारेमे कहिआ धरि अंतिम निर्णय होएत आ से के करत?"

"तूँ बड़ मूर्ख छह । व्यर्थक पचड़ामे पड़ल रहबाक हेतु तँ मृत्युलोके पर्याप्त अछि । तूँ अखन दिव्यलोकमे छह । मानलहुँ जे तोरा अखन दिव्यदृष्टि नहि भेटलह अछि । तथापि विचार करहक, अपने अंतर बुझेतह ।"

"मुदा तोँ छह के? सामने किएक नहि आबि रहल छह?"

"फेर ओएह बात? एहिठाम आगा-पाछा किछु नहि छैक । जखने तोहर दिव्यदृष्टि जागि जेतह ,सभ भ्रम अपने हटि जेतह ।"

"ओ!"

हम उत्सुकतासँ ओहि पिपहीक बिचला बटन दबओलहुँ । मोनमे सोचिते रही कि कै दिन सँ रागिनीक किछु समाचार नहि भेटल कि बटन दबबतहि रागिनीकेँ बहुत दूर ककरोसंगे रंग- रभसमे मस्त देखैत छी ।

"ओ के अछि? -हम मोने मोन सोचि रहल छी । ताबते ओ दृश्य फरिछाइत गेल । रागिनी आ शरद हमरा सामनेमे ठाढ़ हँसि रहल छल ।

" की बात छैक, मनोज?"-शरद बाजल ।

"बात की रहतैक । हमरा तँ एहिठामक ताल-पातरा किछु नहि बुझा रहल अछि । तूँ सभ एतेक मौजमे छह आ हमरा अखनो ओएह हाल अछि, से किएक?"-हम बजलहुँ । से सुनितहि रागिनी जोरसँ हँसि देलीह आ शरदकेँ संगे नचैत- गबैत अदृश्य भए गेलीह। "पहिने तँ एकरासभकेँ एतेक झंझट रहैक । आब दुनूकेँ एतेक घेटजोड़ी केना भए गेलैक? शरदसन फसादी दिव्यलोकमे कोना पहुँचि गेल ?"- ई बातसभ हमर मोनमे उठैत रहल । मुदा ई सभ फरिआएत के? मोन व्याकुल भए रहल छल । हम फेरसँ बिचला बटन दबओलहुँ ।

एहिबेर बटन दबबतहि एकटा बिकराल रूपधारी पुरुष उपस्थित भेलाह। हम हुनका देखितहि सकपका गेलहुँ । हमर माथा जोरसँ घुमए लागल । एहन भयावह लोकक कल्पना हमरा नहि छल । ई पिपही तँ आफदक जड़ि बनि गेल । आब की करी?

"अहाँ के छी?"

" एहिठाम प्रश्न -उत्तर करबाक परंपरा नहि छैक । सभ किछु अपनहि होइछ, किछु करए नहि पड़ैछ ।"

"मुदा हमरा संगे एना किएक भए रहल अछि?"

" हम छी महाकाल । हमर आदि-अंत किओ नहि देखलक। अहाँ बेसी बुझबाक फिराकमे नहि पड़ू नहि तँ कष्टमे पड़ि जाएब ।"

सामनेमे किछु राखल देखलिऐक । नान्हिटा पुड़िआमे किछु छलैक । हम ओकरा हाथमे राखबाक प्रयास केलहुँ कि ओ अदृश्य भए गेल। हम अबाक ओहीठाम बैसि गेलहुँ । सामने चौकपर तरह-तरहक चीज-वस्तु राखल छल । मोन भेल जे मालपुआ खइतहुँ । तुरंते मालपुआ एकटा थारीमे राखल छल । भरिमोन मालपुआ खेलहुँ। चाह पिलहुँ। ताबे बुझाएल जेना किओ हमरा देखि हँसि रहल अछि । ओकरासभक हाथमे मादक गंधयुक्त हरिअर कंचन कोनो तरल वस्तु सँ भरल गिलास छलैक । एहन मादक गंध कथीक भए सकैत अछि?- मोने-मोन सोचाए । ताबते कतहुसँ आबाज आएल -

"ई थिक दिव्यरस। "

“ओ! हमरो भेटि सकैत अछि की?"

“अहाँ तँ अपने चाह पीबए लगलहुँ ।”

देखिते-देखिते ओ सभ दिव्यरसक भरि सीसी पीबि गेल। तकरबादक दृश्य तँ देखैत बनैत छल । मदमस्त, एक-दोसरसँ एककार भेल सभ नाचि रहल छल ।

“ई तँ रागिनी लागि रहल अछि ।”

शरदकसंग ओकरा एतेक अंतरंग देखि हमर मोन जरि गेल। हम चिचिआ उठलहुँ-

"रागिनी बस करू तमासा ।" औ बाबू हम एतबे बजले छलहुँ की किओ जोरसँ हमर गट्टा धेलक । कतबो कहिऐक ओ नहि छोड़लक ।

" अहाँ के छी आ हमरा एना किएक धेने छी?"

"हम महाकालक दूत छी ।"

"मुदा हमरा तँ किछु नहि देखा रहल अछि ।"

"तकर समाधान अहाँक हाथक पिपही कए सकैत अछि ।"

हम ओहि पिपहीक बीचक बटन नहि दबा कए कतका बटन दबा देलिऐक । लएह ,ई तँ आओर गड़बड़ भए गेल । हम कतए आबि गेलहुं? उलटैत-पलटैत कतहु अपने रूकि गेलहुं । ओहिठाम कतहु किछु नहि देखा रहल छल । चारूकात अन्हार गुप्प। हमर पिपही से कतहु खसि पड़ल । ऊपर-नीचा कतहु किछु नहि छल । सामने एकटा पोखरि सन बुझाएल । बहुत जोर पिआस लागल छल । हम पानि पिबाक हेतु आगा बढ़ैत छी । ताबतेमे भयानक आवाज सुनाएल-

"खबरदार! जौं आगा बढ़ब तँ रौरब नर्कमे धसि जाएब ।"

"हमरा तँ ई पोखरि बुझाएल, तैं ओमहर जा रहल छलहुँ।"

"ई अंधलोक थिक । एहिठाम किछु स्पष्ट नहि देखाइत छैक, ने बुझाइत छैक ।"

"अहाँ के छी? अहाँक नाम की अछि आ हमरा एना किएक पकड़ने जा रहल छी?"

"हम छी, प्रभु ।"

"अहाँ तँ हमर पिता छी।”

"रहल होएब कहिओ । मुदा आइ-काल्हि हम महाकालक चाकरीमे छी । ओ अहाँकेँ बजओलथि अछि।"

“अहाँ कहिआ एमहर आबि गेलहुँ ।"

"अहाँ हमरासभकेँ असमयेमे छोड़ि गेलहुं । हम ई दुख बरदास नहि कए सकलहुँ । थोड़बे दिनक बाद हमहु गुजरि गेलहुं।"

"हम तँ अहाँक पिण्डदानो नहि कए सकलहुँ?"

"आब तकर की माने छैक? जखन अहाँ रहबे नहि केलहुं तँ पिण्डदानक कोन सबाल उठैत छैक? फेर पिण्डदानसँ होइते की

छैक? एतेक गोटे जे अंधलोकमे बौआ रहल अछि से किएक? एहिमे कतेकोकेँ ओकर संतान सभ मरला पर जबार केने रहैक,बैदिकी श्राद्ध आ पता नहि की,की केने रहैक । आ ढ़ाकक तीन पात । ओहोसभ ओहिना बफारि तोड़ि रहल अछि । असलमे मोन शुद्ध रहितैक तखन ने? अंत-अंत धरि हेराफेरी मे लागल रहलैक । निर्दोष लोककेँ सतबैत रहलैक । एहन लोकक आओर भइए की सकैत छलैक ? गीतामे भगवान तैँ ने कहने छथिन जे अंतिम कालमे जे जेहन सोचैत रहत तेहने ओकर गति होएत ।"

" मुदा हमर तँ किछु करू । अहाँ तँ अपन लोक छी । अहाँ नहि मदति करब तँ के करत? पितासँ बढ़ि कए के भए सकैत अछि?" । "

" एहिठाम मृत्युलोकक हिसाब नहि चलैत छैक । "

“ई कोन न्याय छी?"

"न्याय-अन्यायक हिसाब करएबला हम के?"

" तँ के करत?"

"महाकाल!

“ऐँ!”

“आओर के करत?"

किछुकालमे हम महाकालक दरबारमे हाजिर कएल गेलहुँ।

-7-

"सरकार! हमरासँ गलती भए गेल ।"

"तोरासँ वारंबार एना किएक भए रहल छह? ई कोनो मृत्यु लोक नहि थिकैक जे हेराफेरीमे लागल रहबह । एहिठाम सभकिछु स्वचालित छैक । एमहर-ओमहर करबह तँ तुरंते पकड़ल जेबह ।"

"मुदा हमरे संगे एना किएक भए रहल अछि?"

"ई तोहर भ्रम छह । जे किओ एहन करत तकरा ओहिना हेतैक । "

"मुदा कै गोटाकेँ तँ बहुत सुखी देखैत छी ।"

"इएह ने गड़बड़ी करैत छह । सदिखन अनके प्रति सोचैत रहैत छह ।"

"एहिसभसँ बचबाक किछु व्योंत करिऔक कारण हमरा तँ अपने से सभ होबए लगैत अछि ।"

"कहलिअह से तूँ बुझलह नहि । एतेक ककरा समय छैक जे तोरामे लागल रहत। तोरा पिपही देलिअह । ओहीमे समाधान छलैक । तूँ ओकर गलत-सलत बटन दबा दैत छलहक । ओ निष्क्रिय भए गेल आ तोरा अंधलोकमे पटकि देलकह ।"

"आब की हेतैक? किछु तँ रस्ता निकालबै नहि तँ हम तँ बौआइते रहि जाएब ।"

"से हम की करबह? जेहन तोहर कर्म हेतह,तेहने ने भेटतह। एहिठाम तँ पूर्वजन्मक कर्मक हिसाबे सभकिछु फलाफल होइत अछि ।"

""हमर कल्याण करू । कोनो ऊपाय करू जाहिसँ हमरा नीकठाम जोगार लागि जाए।"

"जोगार...? कहलिअह से बुझलहक नहि?एहिठाम जोगारक गुंजाइस नहि छैक । जे हेतैक से अपने हेतैक ।'

"मुदा कहिआधरि हेतैक?"

"तोहार फाइल हरा गेल अछि । तेँ निर्णयमे देरी भए रहल अछि । धैर्य राखह । ताबे ई पिपही राखह । एहिमे कोड लागल

छैक । ध्यानसँ एकरा चलबिअह । जँ फेर किछु गड़बड़ केलह तँ तूँ जानह आ तोहर काज जानए ।"

हम पिपही संगे बान्हल कागजमेसँ कोड पढ़ैत छी आ कोड संख्या एक दबा दैत छी। औ बाबू! भक दए इजोत भए गेल। चारूकात देखाए लागल । महाकाल चाकर समेतं बिला गेल छलाह। आब बुझलिऐक जे ई पिपही केहन उपयोगी अछि । जरूर महाभारत कालमे इएह वा एहने कोनो यंत्र व्यास संजयकेँ देने गेल रहथिन ,नहि तँ घरे बैसल ओ सभटा खिस्सा धृतराष्ट्रकेँ कोना सुनाबति? आइ-काल्हिक टेलीवीजन भए सकैत अछि ओकरे प्रतिकृति होइक किंवा ओहीमेसँ किछु-किछु गुण जेना-ने तेना हासिल कए लेने होथि । जे होइ मुदा ई अछि अजूबा यंत्र , एहिमे कोनो सक नहि।

सभसँ कठिन छल एकर कोडकेँ मोन राखब । ओना पुर्चीमे सभकिछु लिखल छलैक मुदा जौँ ओ हरा गेल किंबा फाटि गेल तँ फेर ओएह लफरासभ शुरु भए सकैत अछि ।

इजोत होइतहि हमरा लखनपुर आ मौजपुरक बीचमे बनल पुल देखाएल । ओतए किछुगोटे श्यामकेँ घेरि जोर-जोरसँ नारा लगा रहल अछि ।

"तिरपित बाबू जिंदाबाद । तिरपित बाबू अमर होथि ।”

तिरपितक लहास लेने किछुगोटे घुमि रहल छलाह । श्याम हुनकासभकेँ हाथ-पैर जोरि रहल छथि । मुदा क्यो हुनकर सुनि नहि रहल अछि । पुलक दुनूभाग पुलिस घेरने अछि । लगैत अछि जेना कोनो जबरदस्त कांड भए गेल अछि ।

हमरा नहि रहल गेल । यद्यपि महाकालक चेतौनी हमरा मोने छल तथापि गामक बात छलैक,नहि मोन मानलक ,भेल जे जँ

एक बेर अपने जा कए देखि सकी तँ बढ़िआँ रहत ,सही समाचार भेटत आ जिज्ञासा सेहो कए लेबैक । ई बुझेबे नहि करए जे तिरपित कैँ एना किएक भेलनि । जरूर श्याम किछु फसाद केने होएत । असली बात तँ ओतहि पता लागत । मुदा जाएब कोना? हमरा ई बात नीकसँ बूझल छल जे आब हम ओ मनोज नहि थिकहु जे रागिनीसंगे इसकूलक रस्तामे खेलाइत रहैत छल । जकर हाथ-पैरमे दम छल,जे जखन जतए चाहए चलि जाइत छल । आब तँ हम की छी से अपनो नहि बुझाइत अछि । महाकालक देल पिपही आ तकर गुप्त कोडक बले कतेक कुदब ? अपन हालपर अपने हँसी लागि रहल अछि । एक मोन कहैत अछि-

"जखन अहाँक ई हाल अछि तँ कथीक लौलमे पड़ल छी?"

दोसर मोन कहैत -" जा धरि स्मृति काज कए रहल अछि,आ मोनमे भावनाक संचार भए रहल अछि ताधरि अहाँ कोना बँचि सकैत छी ? बँचिओ कए कतए जाएब?संसारसँ बँचिओ जाएब मुदा अपने-आपसँ? कोनो उपाय नहि छैक अपनासँ बँचबाक ।"

फेर मोन होइत-"अहाँ तँ स्वयं समस्या ठाढ़ केने छी? ने अहाँकैँ देह अछि ने माथ । लोकसभ ई बात बुझिओ रहल अछि । तखन अहाँक कोन दायित्व शेष रहि गेल जे एतेक व्यग्र छी?"

फेर दोसर मोन कहैत-"सबाल दायित्वक नहि छैक?"

"तँ कथीक छैक?"

"हमर अपने मोनमे एहि तरहेँ अन्तर्द्वन्द होइत रहल, ताधरि जाधरि ओ लहास अदृश्य नहि भए गेल । की भेल, कोना भेल तकर जिज्ञासा बनले रहि गेल ।

एना दृश्य-अदृश्य होइत घटनाक्रमसँ हम अचंभित छलहुँ। सभसँ बेसी चिंता महाकालक देल पिपही रक्षा लए होइत छल । हमरा लगमे तँ जे छल से ओएह छल आ जँ ओ फेर गुम भेल तँ भगवाने मालिक ।पिपही कोड मोन रखबाक जतेक चेष्टा करितहुँ ततेक जल्दी ओ बिसरा जाइत छल । तैं पिपहीसंगे कोडबला कागजकेँ सम्हारि कए राखब बहुत जरूरी छल ।

निश्चय ई पिपही किछु विशेष छल । कीसभ एकर विशेषता छलैक से किओ कहलक नहि ,ने ओकरा संगे कोनो सूची छलैक जे पढ़ि कए सभबात शुरुएमे बुझि लितहुँ ।इएहसभ सोचैत रही कि कोड संख्या एक फेरसँ दबा गेल ।फेर ओएह पूल देखा रहल छल मुदा ओतए लोकक भीड़ छटि गेल छल। तिरपितक लहास लेने किछुगोटे "रामनाम सत्य है" कहैत बहुत आगू चलि गेल छलाह मुदा श्याम अखनो पूलक कातमे पुलिसबलासभसँ गप्प कए रहल छलाह । मुदा ई की? ओ तँ बूढ़ लागि रहल छलाह ।केसो पाकि गेल छलनि ।समयक गतिक ताल-पातरा नहि बुझा रहल छल ।हमरा तँ लागए जेना हम किछुए कालपूर्व अपन गामसँ अएलहुँ अछि ।मुदा एतबे कालमे एतेक परिवर्तन कोना संभव भए सकैत अछि ? फेर भेल जे जरूर ओहूमे किछु रहस्य हेतैक ।सोच-विचारक क्रममे पिपही कोड संख्या नौ दबा गेलैक। औ बाबू! लगलैक जेना पुलिसक सायरन बाजि रहल अछि ।रहि- रहि कए आबाज आबए लागल-

"की बात? हमरा किएक बजओलहुँ ?"

"हम कहाँ ककरो बजओलिऐक?"

"बेकारक बहस नहि करू।की पुछबाक अछि से बाजू नहि तँ फेर ई मौका नहि भेटत?"

"श्याम एतेक जल्दी बूढ़ कोना लागि रहल अछि?"

"लागि नहि रहल अछि, भए गेल अछि । मृत्युलोकक समयक गणना बहुत छोट छैक । दिव्यलोकक एकपलमे एतए कतेको बर्ख बीति जाइत अछि ।"

"ओ! ई तँ अद्भुत अछि ।"

"जे अछि, से अछि, मुदा अहाँ कान खोलि कए सूनि लिअ। पिपहीक कोड सावधानीसँ प्रयोग करू । आब अहाँ लग मात्र दूटा अवसर अछि । तकरबाद की होएत से हमहु नहि जनैत छी ।"-से कहि ओ आबाज लुप्त भए गेल ।

-8-

पिपही आ कोडबला कागजकेँ नीकसँ रखलाकबाद सामने राखल बेंचपर सुस्ताइत छलहुँ। ओहिठाम करेटक -करेट दिव्यरस राखल छल । किओ चौकीदारो नहि छलैक । जे जेमहर सँ आएल एकटा सीसी उठओलक आ गटकि गेल । फेर दोसर सीसी गटकि गेल । एहि तरहेँ सीसीपर सीसी ढ़ाड़ि रहल छल । दिव्यरसक प्रभावसँ ओ सभ मस्तीमे नचैत-गबैत आगू बढ़ि जाइत छल । चारूदिस मनमोहक ओ मादक दृश्य छल । हमरा नहि रहल गेल। हम तर्र दए हाथ बढ़ओलहुँ आ सीसीकेँ अंदर केलहुँ। औ बाबू! जहाँ एकघोंट भीतर भेल हेतैक कि सौंसे देहमे जेना करेंट लागि गेल। आब होबए लागल जे रागिनी कहुना लगमे रहैत । हमहु नचैत-गबैत आगू बढ़ि जइतहुँ । एतबा सोचिए रहल छलहुँ कि सुनैत छी-

"की रागिनी, रागिनीक रट लगेने छी। एहिठाम कोनो लोकक कमी छैक जे अहाँ मृत्युलोक जकाँ बफारि तोड़ि रहल छी।"

किछु सोचितहुँ,किछु बुझितिऐक ताहिसँ पहिने एकटा अद्भुत सुंदर तरुणी हमरा देखाइत छथि । ओ देखैत सौंदर्यक पराकाष्ठा छलीह । सौंसे देहसँ जेना इजोत निकलि रहल छलैक । कहि नहि विधाता कोन क्षणमे हुनका गढ़ने हेताह? सुगंधसँ संपूर्ण वातावरण महमह करैत छल ।

"अहाँ के छी?"

"हम छी दिव्यपुरक प्रसिद्ध राजनर्तकी मंजुषा।"

"ओ! अहाँक स्वागत अछि ।"

मंजुषा दिव्यरसक दूटा सीसी अपने हाथे निकालैत छथि । एकटा सीसी अपने गट-गट अंदर कए लैत छथि आ दोसर हमरा पकरा दैत छथि। हम तँ कैटा सीसी पहिनहि पीबि चुकल छी"

"कोनो बात नहि एकटा आओर सही ।"

दिव्यरसक असर ततेक जोरदार भेल जे पिपही किछु सोह नहि रहल । मंजुषाक संग रंग -रभस करैत काल ओकर कोनो बटन दबि गेलैक । बटन की दबेलैक,जुलुम भए गेलैक । आब तँ हमरा किछु नहि बुझाइत छल,किछु नहि देखाइत छल ।

"आब की सोचि रहल छह । एतेक बुझा कए कहने रहिअह मुदा सीसीपर सीसी ढ़ारने जाइत छलह । पिपही तँ सम्हारि कए रखितह ।"

"अहाँ के छी?"

" तिरपित, तोहर मास्टर ।"

"एहिठाम की कए रहल छी? अहाँक तँ लहास देखने रही। ओहिदिन पुल लग लोकक मेला लागल छल । सभ श्यामकेँ गरिआ रहल छल । "

" ओ तँ बहुत पुरान बात अछि ।"

" हमरा तँ किछुए काल पूर्व ई देखाएल छल ।"

"छोड़ह ई गप्प-सप्प । किओ सुनि लेतह तँ मोसकिलमे पड़ि जेबह ।"

"से किएक? '

" ई अंधलोक थिक । एहिठाम हम तोरासँ गप्प करबाक हेतु अधिकृत नहि छी ।"

"से किएक?"

"बेसी कबाइत नहि पढ़ह । भागह ......"

-9-

अंधलोकमे चारूकात अन्हारे-अन्हार छल । एहिठाम सौंसे दुनिआँक लोकसभ फँसल छथि । हुनका लोकनिक आत्मा एहिठाम बौआइत रहैत अछि । ककरो शांति नहि,कोनो सुख नहि,सभ परेसान,व्यग्र ,अभावग्रस्त । मृत्युलोकसँ देह तँ छुटि गेलैक तथापि ओकरसभक मोन ओतहि अटकल छल । एहन ठाम तिरपित कोना पहुँचि गेलाह? असलमे भेलैक ई जे अपने ओहिठामक किओ किरानी अंधलोकक हिसाब-किताब करैत छल। ओ बहुत दिनसँ एहि काज कैं करैत-करैत काजमे माहिर भए गेल छल । सभकैं ओकरापर विश्वास रहैक । तकरे ओ फएदा उठओलक आ घोटाला कए देलक । जाबे-जाबे बात खुजलैक ताबे तँ बहुत किछु भए गेल छल। तखन की कएल जाए । ओकरा तँ हटा देल गेल मुदा काज कोना चलत? ताबते तिरपित ओतए पहुँचलाह । जेबाक तँ हुनका दिव्यपुरम रहनि मुदा महाकाल हुनकर

इमान्दार छवि देखि अंधलोकक तहसीलदार बना देलाह । इहो एक तरहें हुनकर नियति छल अन्यथा ओ दिव्यलोक छोड़ि अंधलोक किएक जइतथि?

पिपही बटन कनिको एमहर-ओमहर होइक आ हम कतएसँ कतए फेका जाइत छलहुँ। एहन तँ कहिओ नहि देखने रहिऐक । कतहु-ने-कतहु हमरा बुझबामे दिक्कति भए जाइत अछि आ अछैते पिपहीकें हम बौआ रहल छी"- हम सएह सभ सोचैत अंधलोकक चौकपर ठाढ़ रही कि कोनो परिचितक आबाज सुनबामे आएल ।

"अहाँ के छी?"

" ई तँ अहाँकेँ स्वयं बुझबाक चाही ।"

"बुझौअलि नहि बुझाउ । साफ-साफ कहू ।"

"इएह तँ अहाँक दिक्कति अछि । "

"जखन से बुझि रहल छी तँ हमर रस्ता सोझरा किएक नहि दैत छी?"

"ई हमर काज थोड़े थिक ।"

"मुदा अहाँ छी के?"

"अन्तरदृष्टि"

"से की भेलैक।"

"लएह । हम कहैत रही जे हम अहाँक प्रश्नक जबाब नहि छी कारण अहाँक लगमे हम छीहे नहि ।"

"कारण?"

" एहि प्रश्नक उत्तर तँ नियतिए दए सकैत छथि ।"-एतबा कहि ओ ओहिठामसँ लुप्त भए गेलाह । हुनका जाइत-जाइत ततेक प्रकाश भेल जे तकरे इजोतमे पिपही देखाएल । हम ओकरा लपकि

लेलहुँ । एहिबेर हम पक्का निर्णय केलहुँ जे पिपहीकेँ आब एमहर-ओमहर नहि होबए देब।

"मुदा अहाँक चाहने की होएत?"

" अहाँ छी के?"

" अहाँक नियति ।"

"ओ तँ अहीँक द्वारे हमरा ई सभ परेसानी अछि ।"

"हमरा द्वारे किएक होएत?"

"तखन?"

"तखन की?"

"किछु तँ स्पष्ट करऔक जाहिसँ हमर आगूक रस्ता साफ होअए । हम बुझि सकी जे आब हमर गंतव्य की अछि । हम कतहु चैनसँ रहि सकैत छी कि एहिना बौआइत रहब ।"

"सभटा जखन अहीँ बुझि जेबैक तखन नियति की भेलैक?"

"मुदा नियतिओक पाछा तँ कथुक हाथ हेतैक ।"

"छैक किएक नहिं? "

" एना बुझौअलि नहि बुझाउ ।"

"मानि लिअ जे हम अहाँकेँ बुझाए देब तँ अहाँकेँ चैन होएत? नहि होएत? अहाँ फेर एकटा नव प्रश्नक संग ठाढ़ रहब ।"

" से किएक?"

"कारण अहाँक इएह नियति अछि ।"

ओकर सबाल- जबाब सुनि हम निरुत्तर भए गेलहुँ । हमरा छगुन्तामे देखि ओकरा दया आबि गेलैक । फेर अपने बजैत अछि-

"नियति किछु नहि, अहीँक पूर्व कर्मक प्रतिबिम्ब अछि । एकरा अहाँ किछु नहि कए सकैत छी । जे अहाँ कए सकैत छलहुँ से कए चुकल छी । आब तँ ओ अपन काज कए रहल अछि ।"

"मुदा हमरा अहिसभ सँ मुक्ति कोना भेटत? कोनो रस्ता होइक तँ कहू।"

"रस्ता तँ अन्तरदृष्टिएसँ भए सकैत अछि।"

"मुदा से हमरा कहिआ आ कोना भेटत?"

"प्रतीक्षा करू ।"

से कहि ओ आबाज लुप्त भए गेल । कतबो कोशिश केलहुँ ओ आपस नहि आएल, दोबारा ओकरा नहि सुनि सकलहुँ । चारूकात एमहर-ओमहर बौआइत रही । भेल जे जाबे हमर हिसाब नहि फरिछा रहल अछि,जाबे नियति हमर दिसा स्वयं नहि तय कए दैत छथि ताबे एहि पिपहीकेँ सम्हारि कए राखी । एहीमे कल्याण अछि ।

"सेहो तखने होएत जखन नियतिकेँ से मंजूर होइक ।"

से सुनितहि मोन भेल जे ठोहि पारि कए कानी । कहिअनि-

"हे विधाता! हमरापर दया करू । "

मुदा हम असमर्थ भेल ओहिना अंधलोक चौराहापर ठाढ़ रहि गेलहुँ । संभवतः हमर इएह निएति हो?"

-10-

हम पिपहीकेँ सम्हारि कए रखबाक प्रण कए लेने रही मुदा ओकरा रखितहुँ कतए? ने अंगा छल ,ने जेबी,ने बटुआ । एहनो

समय हेतैक से नहि सोचने रही । हमही एतेक दुबिधामे छी की आओरो लोकसभ अहिना परेसान अछि?किछु कहल नहि जा सकैत अछि । सुनने रहिऐक जे मृत्युसँ जीवनक अंत भए जाइत अछि । जीवनक जे होइत होइक मुदा समस्याक अंत तँ नहिऐ होइत बुझा रहल अछि । मौजपुर हो वा लखनपुर सभगामक लोकसभ गाहे-बगाहे एतहि पहुँचि गेलाह । बात ओतबे रहितैक तँ कोनो बात नहि । देश-विदेशक लोकसभ एहिठाम विद्यमान छथि,समयक घात-प्रतिघात सहि रहल छथि । किछुगोटे एहनो छथि जे एखनो मृत्युलोकमे अपन अर्जित अकूत संपत्तिकक हेतु बेचैन छथि ।

एहने एकटा व्यक्ति छलाह श्याम । कहि नहि कहिआ आ कोना अंधलोकक गेटपर पड़ल छथि । रौद,बसातसभ लागि रहल छनि । कोनो प्रकारक सुविधा नहि भेटि रहल छनि । चाही सभटा,भेटि किछु नहि रहल छनि । पिआस,भूखसँ छटपटा रहल छथि । समाधान किछु नहि । तिरपित कै बेर अबैत-जाइत हुनका देखैत छथि । हुनकर बास अंधलोकेमे छनि । श्यामक दशापर हमरो दया अबैत रहैत अछि।

पिपहीकेँ बेर-बेर उलटि-पुलटि कए किछु करबाक प्रयासमे रही । हमरा बसमे आओर किछु छलहो नहि । तिरपित जँ देखेबो करितथि तँ बेसीकाल टरका दैत छलाह । असलमे ओ अपने काजसँ बहुत व्यस्त छलाह । महाकालक विश्वस्त हेबाक कारण सभटा संवेदनशील फाइल हुनके जिम्मा छल । किछुदिन पहिने भेल धांधलीमे बहुतरास फाइलसभ एमहर-ओमहर भए गेल रहैक। तकर जाँच-पड़ताल चलिए रहल छल मुदा एखन धरि किछु निजगुत पता नहि चलि सकल । तिरपिते एहन व्यक्ति छलाह

जिनका हम जनैत छलिअनि,जे महाकालक कृपापात्र छलाह । मुदा ओ तँ सदिखन अपन काजमे लागल रहितथि । ककरोसँ,कथुसँ, किछु लेना-देना नहि । जखन कखनो गप्प करबाक प्रयास करी हुनकर संग चलि रहल अंगरक्षकसभ भयावह रूप धए लैत । हम सकपका जाइत छलहुँ । तिरपित काका हँसि दितथि आ आगू बढ़ि जइतथि। मोने-मोन सोची जे तिरपित तँ एहन निसोख नहि छलाह । कै बेर इसारासँ ओ किछु बुझेबाक प्रयास करितथि मुदा हम बुझितिऐक तखन ने?

हमर ने कोनो बगए छल ने कोनो ठेकान । कालक वशीभूत भए चारूकात बौआ रहल छलहुँ । एहिना एकदिन एकटा चौक लग बैसल छलहुँ । ओहिठाम एकटा मार्गदर्शक लागल छलैक जाहिमे तीनटा दिशासूचक पट्टिका छल । सभसँ ऊपर दिस दिशा निर्देश करैत उज्जर रंगक पट्टिका छल जाहिमे लिखल छल-दिव्यलोक । बीचमे एकटा कारी रंगक पट्टिका छल जाहिमे नीचा दिस जेबाक संकेत बनल छल आ ओहिमे लिखल छल अंधलोक। सभसँ नीचा छल हरिअर आ पिअर रंगक पट्टिका जाहिपर लिखल छल मृत्युलोक । मृत्युलोकक दिशा सोझे सामने देखा रहल छल । कहक माने जे ओहिठामसँ एहि तीनूलोकमे गेनिहार लोकसभ गुजरैत छलाह । हम मोने-मोन सोचलहुँ जे ई तँ अद्भुत चौक अछि। किएक ने एतहि किछु काल बैसल रही । भए सकैत अछि जे किछु चमत्कारे भए जाए, हमरो कोनो ठेकान लागि जाए ।

ओहिठाम चुक्कीमाली बैसि गेलहुँ । बैसबाक क्रममे पिपही नौ नम्बरक बटन दबि गेलेक। औ बाबू तकरबाद तँ निरंतर आवाज आबए लागल-"महाकालक दरबारमे अहाँक स्वागत अछि । आ से ततेक तरहक भाषामे दोहराओल जाइक जे मैथिलीमे घोषणा

सुनबाक हेतु कतेको काल धरि प्रतीक्षा करए पड़ि रहल छल । सोचलहुँ जे अगुताइ नहि । हम चुपचाप सुनैत रहलहुँ । जहाँ मैथिलीमे उदघोषणा भेलैक की तर्र दए बजलहुँ-

"हमरा ई कहू जे हमर हाथक पिपहीमे की-की सुविधा अछि आ एकरा नीकसँ केना चलाओल जा सकैत अछि जाहिसँ एकर व्यापक उपयोग होइक ।"

" एतेक दिनसँ ई पिपही अहाँक हाथमे अछि आ अहाँ आब ई प्रश्न कए रहल छी ।"

"हमरा माफ करू । हम बहुत परेसानीमे समय काटि रहल छी । करवनो किछु, करवनो किछु भए जाइत अछि ।"

"सभक जड़ि अछि अहाँक नियति । एकरासँ पछोर छुटब असंभव थिक । ई पिपही अहाँक बहुत मदति कए सकैत छल । नियतिवश अहाँ सेहो ठीकसँ नहि कए पाबि रहल छी ।"

"एकर समाधान किछु छैक कि नहि?"

"एहिठाम मौजपुर आ लखनपुर बला गप्प तँ छैक नहि जे लोक दोसरक मामिलामे टांग अड़बैत रहए। अहाँ इएह करबाक अभ्यस्त रहबाक कारण लगातार परेसानीमे पड़ि जाइत छी।"

"तखन की करी?"

" ध्यानसँ सुनू । अहाँक पिपही एही लेल देल गेल अछि जे अंतरद्दष्टि सक्रिय हेबा धरि अपन समय सुखपूर्वक बिता सकी । एहिमे सभ साधन छैक । एकर कोड हम बजैत जाइत छी, अहाँ ध्यानसँ सभटा सुनैत जाउ । अहाँक सभ समस्याक समाधान अपने होइत रहत ।"

तकरबाद ओ पिपहीमे देल गेल तरह-तरहक सुविधा आओर तकरा प्राप्त करबाक हेतु कोडक जानकारी देबए लगलाह। सुरुएमे कहैत छथि-

" अहाँ तँ एकबेर हेल्पलाइनक उपयोग कए चुकल छी । आब मात्र दूटा अवसर अहाँक लग अछि । तकरबाद ई पिपही निष्क्रिय भए सकैत अछि । एहिबातसँ सावधान रहब ।" तकरबाद ओ धराधर कोड बजैत गेलाह । मुदा हमरा तँ किछु मोन नहि रहल "-हम कहलिअनि।

" अहाँ एहन डपोरसंख कहिआसँ भए गेलहुँ । हम फेरसँ सभ किछु दोहरा रहल छी जँ अहाँ एहूबेर ध्यान नहि रखलहुँ तँ अहाँक भगवाने मालिक । हमरा आनोठामक काज देखबाक अछि। दरबारमे बहुत लोकक जिज्ञासा आबि रहल अछि । हम अहींमे लटकल नहि रहि सकैत छी ।"

तकरबाद फेर ओ कोडसभ आ तकर काज कहि गेलाह । हम सतर्क रही । मुदा भेल ओएह । जतेक प्रयास केलहुँ सभ व्यर्थ चलि गेल । तीनटा कोड मात्र ध्यानमे रहल ,बकिए सभ फुर्र भए गेल ।

-11-

हम पिपही कोड नंबर दू दबा देलिऐक। गजब भए गेल। हम तुरंते दिव्यपुरक चौकपर ठाढ़ रही । राजनर्तकी दिव्यरसक सीसी लए स्वागत कए रहल छलीह ।

हमरा दिस दिव्यरसक सीसी बढ़बैत कहि रहल छथि -

"अहाँ कतए चलि गेलहुं? ओहि दिन अचक्के अहाँकेँ देखलहुँ । सोचैत रही जे अहाँ संगे कतहु चली कि ताबते अहाँ बिनु कहने -सुनने चंपत भए गेलहुँ ।"

" व्योमरस असर कए गेल रहए ।"

" अहाँ फुसि बजैत छी । ई कोनो लखनपुरक ताड़ी नहि छैक जे पिबतहि माथा बेकाबू भए जाए । "

"हम तँ अहींकेँ तकैत रही कि पिपही बटन एमहर-ओमहर भए गेल ।"

"चलू जे भेलैक, से भेलैक । अहाँ थाकलो लगैत छी । आब चैनसँ दिव्यरस पिबू। फेर अपन महल लए चलब ।"

हम राजनर्तकीक बातसँ बेस प्रभावित भए जाइत छी । जतेक सोमरस पिबैत गेलहुं,ततेक जोश अबैत गेल । तकरबाद की भेल से की कहू?

हम राजनर्तकी मंजुषासँ गप्प कए रहल छी । नव-नव अनुभव भए रहल अछि । जे चीज खेबाक इच्छा होइत अछि से स्वतः हाजिर भए जाइत अछि । दिव्यरस पीबि हमसभ पलंग दिस बढ़ैत छी । ताबतेमे गलतीसँ पिपहीक बटन नंबर एक दबि जाइत छैक । आ हमर सपना सपने रहि जाइत अछि । लएह ,ई कतए आबि गेलहुँ । मंजुषा कतए चलि गेली । हमरा मोनमे एतेक भय

किएक लागि रहल अछि ? चारूकात एतेक अन्हार किएक छैक ? ककरासँ पुछबैक। टीसनपर ठाढ़ रेलगाड़ीक डिब्बा जकाँ एहिठाम सभक ध्यान गंतव्यपर अछि । जकरे देखू सएह परेसान लगैत अछि। मुदा ई स्थान अछि कोन ? बेर-बेर भ्रम भए रहल अछि । लागल जेना पहिनहुँ हम एतए आबि चुकल छी । एतहि कतहुँ तिरपित देखाएल रहथि । चारूकात ततेक अन्हार रहैक जे ककरो अखिआसब बहुत मोसकिल छल । आखिर एना अछि किएक ?

अंधलोकमे सोचलोपर,कहलोपर मनोवांछित वस्तुजात प्राप्त करबाक व्योंत नहि बुझाइत अछि । तेँ एतुका रहनिहारसभ निरंतर हाहाकार करैत देखल जा सकैत छथि । हम सहायता हेतु पिपहीक बटन दबबैबला छलहुँ कि कतहु कनी इजोत देखाएल,ओहिना जेना अन्हरिआ रातिमे भगजोगनी होइक । ध्यान दए देखैत छी तँ तिरपित हँसैत देखेलाह ।

" तूँ फेर एतहि आबि गेलह?"

"की कहू, किछु-ने-किछु गड़बड़ी भइए जाइत छैक जाहिसँ हम यत्र-तत्र बौआ रहल छी।"

" ई सभ नियतिक खेल छैक ।"

"अहाँ किछु मदति नहि कए सकैत छी?"

"ई सभ क्षेत्र महाकालक अधीन अछि । ककरा करवन की होएत, नहि होएत, किओ आओर नहि तय कए सकैत अछि । हमहु किछु नहि कए सकैत छी ।"

हम तिरपित केँ गोर लगबाक हेतु आगा बढ़ैत छी कि हमरा हुनका बीचमे एकटा देबाल बनि जाइत अछि । हम आब हुनका नहि देखि पबैत छी । ऊपर दिस देखैत छी तँ किओ जोर-जोर ठहाका पारि रहल देखेलाह ।

"अहाँ के?"

"हम महाकाल ।"

हम सकपका गेलहुँ । हुनकर रौद्र रूप अखन धरि नहि देखने रही । दिव्यलोक,अंधलोक,मृत्युलोक सभ हुनकर जीहसँ लह-लह करैत बहरा रहल छल । आ हम ? हम तँ लगैत छल जेना आस्तित्वहीन भेल हुनकेमे समाहित छी ।

"किछु बुझि रहल छहक?"

"दिन-राति अपने आस्तित्वक फिकिर करैत -करैत कतहुँ पहुँचलह? पहुँचबो नहि करबह।"

हम किछु कहबाक प्रयास करैत छी मुदा बकारे नहि फुटि रहल अछि । गुम्म पड़ि जाइत छी । ओ अपने कहैत छथि -

"इएह ने कहए चाहैत छह जे तोहर अन्तरदृष्टि किएक नहि सक्रिय भए रहल अछि?"

"से अहाँ कोना बुझलिऐक?"

हमर प्रश्न सुनितहि ओ बिना किछु कहने अदृश्य भए गेलाह।

धन्य कही एहि पिपहीकेँ जे हमरा किछुओ बुझाइत अछि,देखाइत अछि । जँ ई पिपही नहि रहैत तखन की होइत । कतहु ढ़ेप जकाँ पड़ल रहितहुँ । अपना भरि पिपहीकेँ सम्हारि कए राखी मुदा हालते तेहन छल जे किछु-ने-किछु अनट भइए जाइत छल । केना-ने-केना ओकर बटन नंबर तीन दबि गेलैक । लएह हम तँ लखनपुर आओर मौजपुरक बीचमे स्थित चौकपर ठाढ़ छी। चौकक बीचेमे एकटा बड़काटा पट्टिकापर लिखल अछि-"तिरपित चौक।” हमरा बड़ी जोरकेँ हँसी लागि गेल । हँसी ततेक जोरक छल जे चौकक आसपास गेनिहार लोकसभ थकमका गेलाह । साइकल

सबारसभ साइकलसँ उतरि गेलाह । बसचालक बसमे ब्रेक लगा देलक । चारूकात जेना अफरा-तफरीक महौल भए गेल ।

जे भेल से भेल मुदा एतबा आब बुझि गेलिऐक जे एहि पिपहीक तीनटा बटन बेस काजक अछि । नंबरएकसँ अंधलोक,नंबर दूसँ दिव्यलोक आओर तीनसँ मृत्युलोकमे पहुँचल जा सकैत अछि ।

चौकक दृश्य देखि दंग भए गेलहुँ । लगबे नहि करए जे ओएह गाम अछि । चौक लग एकटा इनार छलैक जतए हमसभ पानि पिबाक हेतु ठाढ़ होइत छलहुँ । सटले एकटा पाकड़िक गाछ छलैक । ओकर छाहड़िमे हमसभ बैसिकए सुस्ताइत छलहुँ । हम की देखलहुँ आ आब की देखि रहल छी । पूरा परिदृश्य बदलि चुकल अछि । हम चौकपर ठाढ़ तिपहिआपर चढ़ैत छी। ओकरा कहलिऐक जे मौजपुर चलह । हम लाख कहिऐक ओ किन्नहुँ तैयार नहि भेल । रिक्साबला डरा कए भागि गेल ।

पैरे-पैरे हमसौंसे मौजपुर घुमि गेलहुँ । एकहुटा चिन्हार लोक नहि भेटल। आश्चर्य होअए जे ई ओएह गाम अछि की? ई ओएह जगह अछि जतए हम बाबूसंगे अपन मालिकक खेतपर जाइत छलहुँ? कनीक आओर आगा बढ़लहुँ तँ इसकूलक स्थानपर विशालकाय भवन छल । ई की अछि ? मोनमे उत्सुकता भेल । ककरासँ की पुछितहुँ?

आगा बढ़ि गेलहुँ । लखनपुरक सीमामे चलि रहल छलहुँ। ऐहिगाममे तँ मौजपुरोसँ बेसी परिवर्तन लगैत छल । महले-महल देखाइत छल । मुदा एकटा परिचित लोक नहि । ई की भए गेल एहिगाम सभकेँ ?

सौंसे इलाकामे मात्र पाकड़िक गाछेटा भेटल जे ओतहि,ओहिना ठाढ़ छल। परिवर्तन ओकरोमे भेलैक । ओकर असार-पसार बढ़ि गेल छल , तथापि पहिचानमे आबि जाइत छल।

-12-

थाकल-हारल हम पाकड़ि गाछ तर सुस्ता रहल छलहुँ कि एकटा स्नेहमिश्रित आवाज सुनैत छी-

"मनोज कोना छी? बहुत दिन बाद आपस अएलहुँ ।"

“सही कहि रहल छी भाइ! हम तँ एमहर बड़ उमीद लगा कए अएलहुँ जे अपन गाम दिस जा रहल छी, सभसँ भेंट-घाँट होएत । पुरना दोस्त सभ भेटताह। काका, काकी, बाबा, मास्टर साहेब सभ भेटताह, मुदा एहिठाम तँ दृष्ये बदलि गेल अछि। एकहुटा पुरना लोक नहि देखा रहल अछि । अहाँकेँ ठामहि देखि बहुत संतोख भेल । अहाँ चिन्हिओ गेलहुँ । हमर अएनाइ सार्थक भेल । आओर हाल-चाल कहू ।"

"भाइ! हम की कहू? हम कोनो गति-मति मे छी ।"

"से की?"

बेसी दिन जिनाइओ ठीक नहि । अहाँ तँ जल्दिए चलि गेलहुँ । क्रमशः आओरो लोकसभ चलि गेलाह । हमही खुट्टा जकाँ ठामहि ठाढ़ छी । लगैछ जेना भगवानकेँ हमर खाता बिसरा गेलनि। मुक्तिक कोनो रस्ते नहि देखा रहल अछि । चाहे-अनचाहे जे -से सहि रहल छी,समाधान किछु नहि कए सकैत छी ।"-से बजैत-बजैत हुनकर आँखिसँ नोर ढ़बर-ढ़बर खसए लागल । गाछक पातसभ जोर-जोरसँ हिलए लागल । लागल जेना अन्हर उठि गेल। हुनकर दुख देखि मोनमे बहुत कष्ट भेल । सोच-विचारमे

पड़ि गेलहुँ। ई गाछ सरिपहुँ ओहिना अछि । कतेको लोक आएल, कतेको लोक गेल मुदा ई एसगरे सभकिछु सहि रहल अछि । रौद,बसात,अन्हर,बरखा सभमे छाती तनने ठाढ़ अछि । गामक सीमापर गामक पहिचान कायम रखने अछि । मुदा एकर दुख बुझनाहर किओ नहि अछि। इएह सभ सोचैत रही कि पाछासँ किओ बाजल -

" तूँ व्यर्थ कानि रहल छह । के-के ने एहिठामसँ चलि गेल। तूँ की छह? तुहूँ जेबह । समय आबए दहक ।"

"अहाँ के छी? "

"हम छी महाकाल । "

"जहन अहाँकेँ सभ किछु बुझल अछि तँ हमर कष्ट किएक नहि हरि लैत छी ।"

" हम ककरो किछु नहि करैत छी । सभ किछु स्वयं भए रहल अछि । समय सभपर भारी पड़ैत अछि ।"

"तखन की करू?"

"समयक प्रतीक्षा ।"

महाकालक बात सुनि पाकड़िक गाछ शांत भए गेल । ओकर छाहरि गहींर भए गेलैक । ओकर डारिसभ नहूँ-नहूँ हिलए लागल । पातसभक हिलब-डोलब फेर शुरु भए गेल ।

हम ओहिठामसँ चलबाक उपक्रम करए लगलहुँ ।

"कतए चललहुँ । एतेक दिनपर अपन गाम अएलहुँ आ बिना किछु खेने - पीने जा रहल छी । कनिको काल बैसू । गप्प-सप्प करू । बहुत रास बातसभ पेटमे फुलि रहल अछि । ककरा कहबैक? संयोगसँ अहाँ भेंट भेलहुँ ।"

" से तँ सही कहि रहल छी । मुदा एहिठामक हाल देखि, अहाँक स्थिति देखि मोन उदास भए गेल अछि ।"

"एकहि दिनमे अहाँक ई हाल अछि । हमर सोचू । केना सालक-साल सभ देखैत रहलहुँ, सुनैत रहलहुँ । आ सेहो बिना कोनो अवलंबकेँ ।"

पाकड़िक गाछक आवेश देखि हम ठमकि गेलहुँ । डेग आगा नहि बढ़ल । एहिगाममे किओ तँ बाँचल अछि जकरा हमरा लेल दरेग अछि । जकरा हमरा देखि कए किछु कहबाक ,मोनक कष्ट बटबाक इच्छा भेलैक,नहि तँ सौंसे गाम घुमि अएलहुँ ,कतहुँ कोनो अपनत्व नहि । ककरो कोनो मतलब नहि । एकटा आओर विचित्र बात देखलिऐक जे लोकसभ अपन-अपन ओसारापर हाथ बारिकए बैसल अछि,की घरमे नुकाएल अछि । एहन तँ नहि छल अपन गाम?

"ठीक छैक । हम आब तखने जाएब जखन अहाँ कहब।"

से सुनि पाकड़िक गाछ बहुत प्रशन्न भेलाह । कहलाह-

"अहाँ हमरे डारिपर आबि जाउ । दुनूगोटे चैनसँ गप्प करब।"

हम पाकड़िक गाछक डारिपर बैसि गेलहुँ । नीचा रहबाक कोनो फएदो नहि छल । गामक हृदय पथरा गेल छल । कम सँ कम एहि गाछमे हरिअरी बाँचल छल । काठ-कठोर भेल मनुक्खसँ ई पाकड़िक गाछ बेसी जीवंत लागि रहल छल ।

दुनूगोटेकँ गप्प करैत देखि एकटा सुग्गा सेहो लगीचेमे आबि कए बैसि गेल ।

"भाइ! श्यामक घरक की हाल छैक?"-हम पुछलिऐक ।

"हाल की रहतैक। अपना समयमे ओकर जे प्रताप छल से तँ अहाँ देखनहि रहिऐक । अहाँसभ तँ कनी जल्दिए चलि गेलहुँ । तकर बाद श्याम बहुत किछु केलक। नवका सरकारमे ओकर नेतागिरी चमकि गेलैक। बड़का,बड़का लोकसभकेँ अपना गाममे अड्डा लागल रहैत छल। किछु-किछु दिनपर बैसार सेहो होइत रहैत छल । गीत-नाद आ कहि नहि की-की होइत छल । श्याम एहिसभक खूब फएदा उठओलक आ अकूत धन-संपत्ति संग्रह केलक। मुदा अन्याय ओ अनीति बेसी दिन कतहु फबैक? सएह ओकरो मामलामे भेलैक । कतबो कोशिश केलक,बेटा नहि उजिएलैक । दिन-राति दारू पीने बुत रहैत छलैक । इलाकाक कन्यासभकेँ तंग केने रहैत छलैक । नेतासभक डरे पुलिस,थाना सभ असहाय रहैक। लोकमे त्राहिमाम,त्राहिमाम मचि गेल।"

"फेर की भेलैक?"

" की होइतैक । लोकसभ मौकाक ताकमे रहए । एकराति श्याम घरमे सुतल रहए । ओकर दूटा चाकर सेहो लगक कोठरीमे रहैत छलैक । कोना-ने-कोना ओ सभ बदमास सभसँ मिलि गेलैक।"

"आओर की भेलैक?"

"की होइतेक । एकराति सुतलेमे दुनू चाकर किछु बदमाससंगे ओकर नरेठी दाबि बहुत रास संपत्ति लए चंपत भए गेल।"

" ई तँ बड़ खराप भेलैक ।"

"अखन की सुनलह । अखन तँ बहुत किछु सुनब बाँकिए छह ।"

"तखन की भेलैक पाकड़ि भाइ?"

हमरा दुनू गोटेकेँ गप्पमे टोकारा दैत सुग्गा बाजल - "पाकड़ि भाइ! बदमाससभ चाकरसंगे मिलि कए श्यामकेँ किएक मारलकै से तँ अहाँ कहबे नहि केलिऐक ।

“तोरा बुझल छह तँ बजैत किएक नहि छह?”- पाकड़िक गाछ बाजल ।

ठीक छैक । हमरा जे बुझल अछि से कहैत छी ।-सुग्गा बाजल ।

"लूट-पाट करब तँ एकटा संयोग छलैक । असलमे एहि षड़यंत्रमे किओ आओर नहि, शरद स्वयं सामिल छल ।"

"छी! छी! की कहि रहल छी?"- पाकड़िक गाछ बाजल ।

"जहन नहि बुझल अछि तँ सुनू तँ सही ।"-सुग्गा कहलकैक ।

"ठीक छैक बाजह ।"- पाकड़िक गाछ बाजल ।

"श्यामक बेटा शरद कतहुँ बिआह करए चाहैत छल । ओ कन्या दोसर जातिक रहैक । मुदा रहैक बहुत सुंदर, पढ़ल-लिखल । शरद बहुत कोशिश केलक जे श्याम मानि जाथि । ओकर बिआह पसिनक कनिआँ सँ करए देथि मुदा श्यामकेँ तँ गिरगिटिआ सबार रहैक । ओ अड़ि गेल ।"

"तखन की भेलैक?"-हम बजलहुँ ।

"ओ कनिआ के छल जकरासँ शरद बिआह करए चाहए?"-हम कहलिऐक ।

"रागिनी?" -सुग्गा बाजल ।

“रागिनी शरदकेँ नहि पसिन्द करैक । तैओ शरद ओकर पाछा पड़ल रहैक । रागिनीक पिता तिरपितकेँ श्याम बहुत फज्जति

कए देने रहैक जाहिसँ दुखी भए ओ रागिनीकेँ इसकूल गेनाइ छोड़ा देलकैक, आ घरमे नजरवंद कए देलकैक ।"-सुग्गा बाजल।

"तोरा एतेक बात केना बूझल छह? -हम पुछलिऐक ।

"अहाँक ताहिसँ की मतलब? -सुग्गा कहलकैक ।

"तकर बाद की भेलैक?

"शरद तँ एहि प्रयासमे रहए जे रागिनीकेँ ओकरे घरसँ अपहरण करबा ली, मुदा श्याम ताहि हेतु तैयार नहि होइक । लठैतसभकेँ शरदपर नजरि राखए हेतु लगा देने रहैक । एहिबातसँ कुपित भए शरद श्यामकेँ बदमास लगा देलकैक जाहिसँ ओ डरा जाथि । रातिमे जखन बदमाससभ पहुँचल तँ ओकरसभक इच्छा श्यामकेँ मारबाक नहि रहैक, मात्र ओकरा डरा देबए चाहैत रहए आ एकटा सादा कागजपर औंठा निसान लेबए चाहए । श्याम तकर बहुत बिरोध केलकैक आ वाजिबे केलकैक । एहि तरहे सादा कागजपर औंठा निसान लए की पता ओकरसभटा धन-संपत्ति हरपि लैत? ताहि अंदेसासँ ओ अपन लाइसेंसी बंदूक निकालए लागल। बदमाससभ ई देखितहि ओकर माथपर लगे राखल समाठ पटकि देलकैक आ ओ ओतहि धम्मसँ खसल से खसले रहि गेल,उठि नहि सकल । माथपरहक चोट छलैक। नश फाटि गेलैक। जाबे अस्पताल पहुँचल ताबे तँ सभ खतम छल । श्यामक एहि तरहेँ अकाल मृत्य भए गेलैक । मुदा पाप कहीं छिपलैए। शरद पकड़ल गेल । कै दिन पुलिसक हाजतिमे बंद रहए । तकरबाद सुनबामे आएल जे ओतहि ओकरा पुलिस बड्ड मारि मारलकै । मारि भितरिआ रहैक । अस्पताल जाइत-जाइत ओ दम तोरि देलक ।"

एतबा बाजि सुग्गा फुर्र दए उड़ि गेल । हमहु औंघा गेल रही । ओतहि सुता गेल ।

हमरा एतेक बात मोन नहि छल । बहुत दिन भेलैक आ फेर आब स्मृतिओ ठीक नहि रहि गेल अछि । मोन विभ्रमित भए जाइत अछि । समयक दोख । पाकड़िक गाछक आँखिमे नोर फेर डबडबा गेल छल । हमरा दुखी होइत देखि ओ बजलाह-

" अहाँ दुखी जुनि होइ । ई तँ हमर प्रारब्ध अछि । किओ की करत? जे केने छी से तँ भोगबे ने करबैक ।"

"अहाँ तँ सभदिन सभकेँ उपकारे केलहुँ । थाकल-पिआसल लोकसभकेँ विश्राम करबाक हेतु छाहरि करैत रहलहुँ । तैओ अहाँ कर्मक फलक बात करैत छी ।

'कोनो एक्के जन्म थोड़े होइत छैक । ई तँ जन्म-जन्मान्तरक निरंतर चलैत कालचक्र थिक। कहि नहि करवन के कतए पटका जाएत?"

मुदा एकरसभक हिसाब के करैत अछि?"

"कहि नहि, हम कोनो पंडित छी जे से सभ बुझबैक । एहिसभक गणना तँ महाकाले लग हेतनि ।"

हमरसभक गप्प चलिए रहल छल कि हमर पिपही घंटी बाजए लागल । एना तँ कहिओ नहि भेल छल । आनदिन हम डराइत-दराइत एकर बटन दबबैत छलहुँ आ कतए-सँ-कतए पहुँचि जाइत छलहुँ । आइ ई अपने बाजए लागल । मनुक्खक मोन जकाँ ई पिपही बहुत रहस्यात्मक बुझा रहल अछि । हम अकबकाएल गाछक डारिसँ नीचा उतरए लगलहुँ कि पिपहीसँ आबाज आबए लागल-"

"महाकालक ओहिठाम अहाँकेँ बजाहटि अछि । शीघ्र पहुँचू ।"

हम पाकड़िक गाछकेँ प्रणाम कए आगा बढ़लहुँ । हमरा लागल जेना पाकड़ि भाइ हाथ हिला-हिला कए विदा कए रहल छथि । किछु कहिओ रहल छथि,संभवतः फेर अएबाक हकार दए रहल छथि । कनीके कालमे हम अंतरिक्षमे विलीन भए गेलहुँ ।

हम महाकालक नामेसँ डराइत छलहुँ । आब तँ प्रत्यक्ष सामना होबएबला छल से सोचिएक मोनमे बोखार लगैत छल । मोने-मोन हनुमान चालीसा पढ़ए लगलहुँ । हमर ई हाल देखि महाकाल जोरसँ हँसि देलाह । हुनका एना हँसैत देखि हम थकमका गेलहुँ ।

"एतेकटा सृष्टिमे सदिखन किछु-ने-किछु होइते रहैत छैक। ई कोनो आइ शुरु भेलैक अछि से बात नहि । एकर कथा अनादि-अनंत कालसँ चलि रहल अछि आ चलिते रहतैक। तूँ एहिसभपर बेसी नहि सोचह ।"

“हमरा अहाँ बजओने रही ।"

"हम किएक ककरो बजेबैक । लोक स्वयं अपने बनाओल मकरजालमे फँसल रहैत अछि ।"

" हम से नहि बुझि सकलिऐक ।"

"बुझिए जेबहक तँ कोन तीर मारि लेबह । ई समय छैक। स्वयं अपन समाधान करतैक ।"-से कहि महाकाल अंतरध्यान भए गेलाह

-13-

हमर मृत्युलोक छोड़ला कतेक दिन भेल से आब अपनो मोन नहि अछि । तथापि हम एखनधरि बौआ रहल छी । बौआ हमहीटा रहल छी से बात नहि छैक । श्याम,रागिनी,शरद,तिरपित आ कहि नहि कतेको गोटे एहने हालमे छथि वा हमरोसँ खराप हालमे छथि । हम बच्चा रही तँ माए खिस्सा कहैत काल उल्कासभक रहस्य बतबैत छलीह जे ओ सभ पितर छथि जे अपन वंशजक हाल-चाल जानबाक हेतु पृथ्वीपर अबैत छथि । से आब सद्यः देखि- सुनि रहल छी । समय ओ स्थानक सीमाक ओहिपार बहुत रास अदृश्य ओ दृश्य वस्तुसभ अछि जकरा जानबाक साधन ने हमरा लोकनिक पास अछि ने बैज्ञानिकसभकेँ । ओहोसभ एहिना अटकारैत रहैत छथि। करवनो किछु,करवनो किछु समाचार लए हाजिर भए जाइत छथि । मुदा एहि सृष्टिक रहस्य जहिनाक तहिना अछि । औ बाबू! जखन से सोचैत छी तँ चिंतामे पड़ि जाइत छी । हम की बुझबैक आ जँ किछु बुझिए जाएब तँ से जानबाक हेतु के बैसल अछि? सभ तँ महाकालक चक्करमे फँसि यत्र-तत्र बौआ रहल अछि। आ पृथ्वीपर लोकसभ श्राद्ध भोज खेबामे मस्त रहैत छथि । सृष्टिमे सभ किछु महाकालक अधीन अछि । मनुक्खक जीवन तँ जेना एकटा जरैत आगिक लुत्ती होअए। क्षणेमे क्षणाक। आ एतनी काल लेल हमसभ कहि ने की -की फसाद केने घुमैत रहैत छी। किओ महल बनबएमे लागल छी तँ किओ मंत्री बनए हेतु परेसान छी । ककरो डकैती करैत देखैत छी तँ किओ हत्यासन जघन्य अपराध करैत छथि । छै ने विचित्र बात? कतेक

ओरिआनसँ हमसभ अपना आपकेँ रखैत छलहुँ । सुख-सुविधाक कतेक चीज-वस्तुक जोगार करबाक हेतु एंड़ी-चोटी एक केने रहैत छलहुँ । सभ ठामहि रहि गेल । आब किछु अपना संगे नहि अछि,जे अछि से नियति मात्र कहि सकैत छी । सभ महाकालक प्रभावक अधीन छथि ।

ओहि राति झमाझम गीत-नाद होइत रहल । पाकड़िक गाछ,सुग्गा संगहि कतेको लोक नाना प्रकारक भेष-भूषा पहिरने-ओढ़ने नृत्य करैत मस्त छलाह । की माहौल छल? जखन जेहन रूप-रंग चाहए बना लैत छल । गौआँसभ तँ सोचिओ नहि सकैत छल जे एहनो होइत छैक। मौजपुर आ लखनपुर गामक लोकसभ ओहि समय एकटा श्राद्धक भोज खा रहल छलाह कि पृथ्वीक भीतर भयानक विस्फोट भेल । पृथ्वी जोर-जोरसँ हिलए लागल । चारूकातसँ आबाज आबि रहल छल-भूकंप,भूकंप । लोकसभ खेनाइ छोड़-छोड़ि भागल। किओ किछु नहि बुझि रहल छल जे ई आकस्मिक संकट कोना भेल आ एकर समाधान की कएल जाए? पाकड़िक गाछ,सुग्गा आ आओरसभ गीत-नाद छोड़ि ठमकि गेलाह। सभ चकुआएल एक-दोसर दिस देखि रहल छलाह।

संयोगे जे भोज अंतिम चरणमे छल । भोज छोड़ि भागैत लोकसभ पाकड़िक गाछ लग पहुँचले छल कि श्याम पाकड़िक गाछसँ नीचा उतरलाह। कनी कालक बाद शरदक संग रागिनी सेहो उतरलीह। एकटा आओर किओ उतरल जे चिन्हा नहि रहल छल। गौआँ सभ एकरासभकेँ देखि परेसान छल । ओ सभ भागि रहल छलाह आ श्याम आबाज दए हुनका सभकेँ बजा रहल छलाह। “औ अहाँसभ नाहक परेसान भए रहल छी । हम एही गामक श्याम छी ।"

" अहाँ हमरासभकेँ मूर्ख बना रहल छी । श्यामकेँ मरला एकयुग भए गेलेक ।-किओ गौआँ बाजल ।

"पहिने हमर बात सुनि तँ लिअ । फेर जे ठीक बुझाए से करब ।"

श्याम कहिए रहल छलाह कि शरद आ रागिनी सेहो तखन ओतए ठाढ़ भए हुनकर बात सुनए लगलाह । गामक लोक किछु नहि बुझि रहल छल । मुदा पाकड़िक गाछ पर बैसल सुग्गा सभटा बुझि गेल ।

"हम एकरासभकेँ नीकसँ चीन्हि रहल छी।"-सुग्गा बाजल।

"तू लाल बुझक्कर छह ।"-पाकड़िक गाछ बाजल ।

" एहिमे कोन बुधिआरीक बात भेलैक । हमरा देखाइत अछि तँ देखैत छी, सुनाइत अछि तँ सुनैत छी । गौआँसभकेँ से किएक देखल-सुनल नहि होइत छनि, से ओ जानथि ।"-सुग्गा बाजल ।

"मुदा ई सभ एतेक दिनक बाद एमहर किएक आएल अछि? -पाकड़िक गाछ पुछलक ।

"आएल थोड़े छैक । बौआ रहल छैक ।"-सुग्गा बाजल ।

अपना गाममे एहि तरहक उठापटक होइत हमरो नहि रहल गेल । महाकालकेँ मोनहि मोन प्रणाम कए उम्हरे विदा भेलहुँ । ओहिठाम अखनो ओहिना त्राहिमाम मचल छल । पाकड़िक गाछसँ सटले श्मशान छल । सभक सारा जसके तस छल । कतहुँ कोनो गड़बड़ीक निसान नहि बुझा रहल छल । सभक मरलापर भोज-भात सेहो भेल छल । कै-कै दिन धरि मंत्र सभ फुकाइत रहल छल । तैओ ढ़ाकक तीन पात । ककरो चैन नहि अछि । ककरो

कोनो ठौर नहि भेटल अछि । हे! श्याम तँ फसादी छलाह मुदा तिरपित तँ तेहन नहि रहथि । ओ किएक बौआ रहल छथि ? हुनकर सदगति किएक नहि भेल? ककर की गति होएत किछु नहि कहल जा सकैत अछि ।

"मनोज! फेर तूँ सोच-विचारमे पड़ि गेलह ।"

हम अपन नाम सुनि अकचका गेलहुँ ।

"के?"

“महाकाल!”

फेर कहैत छथि-“ घबड़ा नहि । जे देखा रहल छह से देखि लएह । जे नहि बुझाइत छह सेहो बुझिए जेबहक ।"

“आब कहिआ बुझबैक?”

"से हम की कहिअह? हमरा लगमे आइ-काल्हि-परसू किछु नहि होइत अछि, सभ अनादि-अनंत अछि । प्रारब्धसँ वशीभूत भए स्वतः घटित भए रहल अछि ।"

से कहि जोरसँ ठहाका पाड़ैत ओ लुप्त भए गेलाह ।

ताबे हम पाकड़ि गाछक आओर लगीच पहुँचि गेल रही । ओहिठाम बेस गहमा-गहमी छल । मौजपुर,लखनपुर सहित आन -आन गामक लोकसभ एकत्रित भए आपसमे चर्च कए रहल छलाह। सभकेँ महासंकटक आभास होइत छलनि । पाकड़ि गाछ अपने ततेक दुखी छलाह जे किछु टोकार देबाक स्थितिमे नहि रहथि। गाम-गामसँ उपस्थित लोकसभ निर्णय केलाह जे ज्योतिषीजीसँ परामर्श कएल जाए । ओ किछु तँ कहताह ।

" सत्य कहि रहल छी । हुनकेसँ परामर्श कएल जाए ।”- गौआँसभ एकस्वरसँ बाजल ।

ज्योतिषीजी गामक प्रतिष्ठित विद्वान छलाह । काशीसँ संस्कृतमे बहुत रास पढ़ाइ केने रहथि । ज्योतिषमे तँ हुनका महारत छल । इलाका भरिक लोकसभ अपन भविष्य जानबाक हेतु हुनका ओतहि अबैत छल । हुनकर परिवार मूलतः काशीक बासी छलाह। कहि नहि कै पुस्त पहिने ओ सभ मौजपुरमे आबि कए बसि गेलाह। मौजपुरबासीसभ हुनकर परिवारक पालन-पोषण करैत छलाह । ताहीसँ हुनकर गुजर होइत रहल अछि । कोनो वच्चाक जन्म भेलापर टिप्पनि ओएह बनबैत छलाह । ककरो कोनो ग्रह शांत करबाक होइक तँ अनुष्ठान ओएह करबैत छलाह । एहि तरहसँ ओ गामक हेतु अनिवार्य भए गेल छलाह । गाममे सभ किछु ठीक रहए ताहि हेतु ओ समय-समयपर अनुष्ठानो करैत रहैत छलाह जाहिमे गाम-गामसँ लोक आबि कए यथासाध्य योगदान करथि । ज्योतिषीजीक असली नाम साइते किओ जानैत रहल होएत । सभ हुनका ज्योतिषीजी कहि कए जानैत छल,बजबैत छल ।

इलाकाभरिक लोकक भविष्य तँ ओ तय करैत छलाह मुदा अफसोचक बात ई छल जे हुनकर अपन भविष्य डमाडोल रहनि । जखन वर्तमाने नहि तखन भविष्य कतए सँ अबैत? एकदिन हुनका सिलौटपर भांग पिसैत देखि महाकालकेँ बड़ी जोरसँ हँसी लागि गेलनि । ओ कहैत छथि-

" ज्योतिषीजी की बात छैक? आइ दुपहरिएसँ भाँग घोटए लगलहुँ ।"

"अहाँ के छी? आइ व्यंग्य करबाक हेतु हमही भेटलहुँ?"

"हमर परिचय पुछबाक काज नहि अछि । अपने बुझा जाएत जे हम की छी ।"-से कहि महाकाल ठहाका पाड़ैत आगू बढ़ि गेलाह ।

ज्योतिषीजीक परिवारमे किओ नहि छल । कहब से किएक? तकर चर्चा फेर करब । असगर रहैत -रहैत कखनहु काल हुनकर मोन उद्विग्न भए जाइ छलनि तँ ओ पाकड़िक गाछ तरमे सुस्ताइत छलाह । ओतहि घंटो बैसल रहितथि । फेर किओ भेट जइतनि तँ ओकरा संगे आपस चलि अवितथि ।

ओहिदिन सौंसे गामक लोकसभ पाकड़िक गाछलग बैसल ज्योतिषीजीकेँ घेरि लेलक । सभक एक्के सबाल जे एना किएक भए रहल अछि । आन बेर तँ ओ किछु-ने-किछु समाधान कए लोककेँ संतुष्ट कए विदा कए दैत छलाह मुदा एहिबेर हुनका किछु नहि फुरा रहल छल । एहन विचित्र दृश्य ओ ने कहिओ सुनने छलाह ने देखने। सभसँ विचित्र बात तँ ई रहैक जे कतहु किओ देखा नहि रहल छलैक । तखन ई सभ कोना भेल आ किएक भेल ?

ज्योतिषीजीकेँ चिंतित देखि पाकड़िक गाछकेँ नहि रहल गेलैक । ओ बाजि उठल-

"की बात छैक ज्योतिषीजी? आइ बहुत परेसान बुझा रहल छी ।"

" की कहू? कहि कए हेबे की करत?

"बेसी गुम्म-सुम्म नहि रहू । अहाँ तँ हमरासँ सभबात करैत छलहुँ । गप्प-सप्प करैत रहलासँ आओर किछु होइक नहि होइक किछुकाल लेल मोन तँ हल्लुक भइए जाइत अछि ।"

"बात तँ अहाँ लाखटकाक कहि रहल छी । मुदा आजुक समस्याक समाधान किछु फुरा नहि रहल अछि । जौँ किछु नहि कहबै तँ गौँवासभक हमरापरसँ विश्वास टुटि जेतेक ।"

“जे हेबाक छैक से हेबे करतैक । भावी किओ रोकि सकल अछि जे अहाँ एतेक चिंतित छी । जे बुझाइए से कहिऔ, जे नहि बुझाइए से महाकालपर छोड़ि दिऔ ।"

“ई गौंवासभ बुझैक तखन ने । "

" बुझबे करतैक, नहि बुझतैक तँ समय तकर इलाज करतैक । अहाँ बेचैन नहि रहू ।"

हमरासभकेँ एहि तरहेँ गप्प करैत सुनि कए सुग्गाकेँ नहि रहल गेलैक । ओ बाजि उठल-

"श्याम, रागिनी, शरद, तिरपित आओर के- के कहि नहि सभ तँ एहीठाम ठाढ़ अछि । से ज्योतिषीजीकेँ नहि देखा रहल छनि?"

"देखैतनि तँ एहिना बेचैन रहितथि ।"

"तखन कथीक ज्योतिष जनैत छथि?"

"बेसी फटर-फटर नहि करह । कोनो उपाय होइ तँ कहक, नहि तँ कमसँ कम आगिमे घी देबाक काज नहि करह । ई ज्योतिष जनैत छथि कोनो ब्रह्मपिशाँच नहि पोसने छथि जे बीतल बातसभ बुझथिन ।"

"लएह, अहाँ तँ तमसा गेल लगैत छी । हम तँ साफे सभ किछु देखि रहल छी । ओ नहि किछु बुझि रहल छथि ताहिमे हमर कोन दोख?"

पाकड़ि गाछसँ सटले श्मशान छल । ओतहि शरद,तिरपित,रागिनी,श्याम,प्रभुसभ अपन-अपन सारासँ प्रकट

भए रहल छथि । संगे एकटा बृद्धा सेहो देखा रहल छथि । सुग्गाकेँ सभटा देखा रहल छलैक । ओ पाकड़िक गाछसँ पुछलक-"भाइ! सभकेँ तँ चीन्हि रहल छी मुदा ओकरासभक संगे ई बुढ़ी के छथि? हिनका तँ कहिओ नहि देखने छिअनि ।"

"हिनका कोना चिन्हबहुन । ई तँ एहिगाममे कहिओ रहबे नहि केलीह?"

"मुदा छथिन के?"

"ज्योतिषीजीक पत्नी छथिन । बहुत पहिने नैहरेमे मरि गेलखिन । बिआह भेले रहनि । गाममे हैजा फैलि गेलैक । सौंसे गाम घरहंज भए गेलैक । ज्योतिषीजी बिआह कए गाम आएले छलाह कि हुनका समाचार भेटलनि । जाबे -जाबे ओतए पहुँचलाह ताबे कनिआक प्राण छुटि गेल छलनि । तहिआसँ बेचारे एहिना छथि । लोक बहुत बुझओलकनि जे बिआह कए लिअ । मुदा ओ नहि मानलखिन, अड़ि गेलखिन ।"

"असली बात आइ बुझलहुँ । ज्योतिषीजीकेँ पता लगतैक जे ओकर घरबाली एतहि मरड़ा रहल अछि तँ ओकर की हाल हेतैक?"

"तूँ कहिओ नहि सुधरबह । हमसभ कोनो ओकर ठीका लेने छिऐक? जे होइत छैक से देखैत रहह । निमित्त मात्रं भव सव्यसाचिन । गीतामे ई बात भगवान ओहिना नेने कहि देलखिन। हमरे-तोरे लेल कहने हेथिन । व्यर्थ बात सभसँ जँ माथाकेँ ओझरओने रहबह तँ कहिओ शांति नहि हेतह ।"

" भाइ! हमरा नहि बूझल छल जे अहाँकेँ गीताक एतेक गहींर ज्ञान अछि ।"

" तूँ अपन सोचह । हमर चिंता छोड़ह ।"

"से की?"

" सभटा कहिए देबह तँ तूँ करबह की ? समय आबह दहक सभटा बात अपने फरिछा जाएत।"

“पाकड़ि भाइ! आश्चर्यक बात अछि जे अखन धरि अहाँ हमरा नहि चीन्हि सकलहुँ ।"

" जाए दएह । हम अपनेकेँ नहि चीन्हि सकलहुँ तँ तोहर कोन बात?"

पाकड़िक गाछक बात सुनि सुग्गा जोरसँ ठहाका पाड़लक। ज्योतिषीजी एहि ठहाका सुनि ठकबिदरो लागि गेल ।

" सुग्गा आ एहन ठहाका । ई तँ बड़ रहस्यात्मक बुझा रहल अछि ।"-ओ माथ पकड़ि कए बैसि गेलाह ।

-15-

सुग्गा छल बड़ गुनकारी । ओकरामे पता नहि कतएसँ एतेक बुद्धि रहैक । भूत,वर्तमान,भविष्य सभ किछु देखबाक,बुझबाक सामर्थ्य रहैक । कहि नहि कतेक दिनसँ ओ ओहि पाकड़ि गाछपर बैसैत छल । पाकड़ि गाछ सेहो विशेष छल, मुदा सुग्गा जकाँ नहि । सुग्गा तँ कमाल छल । ओकरा सभहक खिस्सा बूझल छलैक,मोनो छलैक । मुदा एहि बातक जानकारी लोककेँ नहि रहैक । मात्र ज्योतिषीजी ई बात जनैत छलाह । असलमे ओकरेसँ परामर्श हेतु ओ पाकड़ि गाछतर अबैत रहल छलाह । पाकड़ि गाछ सेहो किछु-किछु सुनैत छल। मुदा कै बेर सुग्गा तेहन भाखाक उपयोग करैत जे ओकरा किछु नहि बुझाइक। ओ सोचए जे सुग्गे थिक,एहिना टर्र,टर्र करैत होएत । मुदा बात से नहि रहैक । रहस्यसँ भरल ई सुग्गा आखिर अछि की?

ज्योतिषीजीकेँ ई बात कै बेर मोनमे खटकनि । मुदा समाधान किछु नहि फुराइन । के करैत समाधान ? रहस्यमयी एहि संसारक गप्प तँ लोक बुझिए नहि पबैत अछि आ ई सुग्गा तँ पता नहि के अछि आ किएक एही गाछपर बैसल रहैत अछि? ज्योतिषी जी ई बात सोचैत रहैत छलाह । चिंतन करैत रहैत छलाह। गामक लोकसभ हुनका एहि हालतमे देखि सोचैत जे ओ बौराएल छथि । हुनकर उपयोगिता तँ लोककेँ तखने बुझाइत छलैक जखन ओ सभ किछु परेसानीमे पड़ैत छल ,नहि तँ हुनका किओ देखनाहरो नहि रहैत छल । ज्योतिषीजी किछु खेलाह कि रातिमे भुखले सुति रहलाह सेहो ककरो अखिआस नहि रहैत छलैक । बाह रे गाम !

लोक सोचैक जे ओ सुग्गा अछि । ज्योतिषजी सेहो सएह सोचथि से बात नहि छैक मुदा ओकर असलियत हुनको नहि बूझल रहनि । रहबो कोना करैत? ओ कखन सुग्गाक रूपमे रहैत आ कखन दोसर रूपमे से के देखलक? ओएह हाल पाकड़िक गाछक रहैक । ओ गाछ तँ कहिआ कतए सुखा गेलैक । कोनो ठीकेदार जारनि हेतु सौंसे गाछकेँ क्रमशः पांगि देने रहैक । टाकाक लोभ जे नहि करा दैक । एहन उपकारी छल पाकड़िक गाछ जतए सौंसे गाम कि इलाकाक लोक आबि कए विश्राम करैत छल । तकरो लोभी ठीकेदार नहि छोड़ने छल । परिणाम भेल जे ओ गाछ निठ्ठाह सुखा गेल । मुदा किछुए दिनमे चमत्कार भेलैक । की भेलैक? ओहिगाछमे नव-नव पातसभ निकलि गेलैक । देखिते-देखिते गाछक डारिसभ ओहिना बक्तिआर भए गेल,चारूकात पसरि गेल। किछुगोटेकेँ ई अनसोहात लगलैक ,बजबो करैक जे एना कोना भेलैक जे सुखाएल गाछ एकदमसँ हरिआ गेल । मुदा आएल पानि,गेल पानि बाटे बिलाएल पानि बला गप्प भेलैक । ककरा

फुरसति रहैक जे एतेक अन्वेषण करैत रहत । लोक सभ बात बिसरि जेबाक अभ्यस्त होइत अछि । सएह भेलैक। सभ मानि लेलक जे ई गाछ बँचि गेल । चलू,नीके भेल । फेरसँ ओकर छाहरिक आनंद लेब । मुदा भेलैक तँ किछु आओर । ने ओ सुग्गा छल आ ने ओ गाछ ।

-16-

ज्योतिषीजीकेँ जखन नीन्न टुटलनि तँ सौंसे देहमे फोके-फोका भए गेल छल । ओ होशमे नहि छलाह । कीओ ओहिठामसँ जाइत काल हुनका गाछक जड़िमे ओंठगल देखलक । ओ चिचिआएल-"दौड़ैत जाउ! जुलुम भए गेल !'

देखिते-देखिते लोकक करमान लागि गेल ।

सभ एक-दोसरसँ पुछि रहल छल-"की भेल?की भेल ?"

के ककरा की कहैत?अंदरुनी बात तँ ककरो नहि बूझल छल ।

लोकसभ उठापुठा कए हुनका लगीचक एकटा घरमे लए गेल । हवा केलक । पानि पिओलक । कनीकालमे ओ आँखि खोललाह ।

"एतेक दिनक बाद तोरा देखलहुँ । हम तँ धन्य भए गेलहुँ ।"

"की देखलिऐक?"-लोकसभ पुछनि । मुदा ओ आँखि उल्टा दैत छलाह । सभ भयभीत छल । एक-दोसरक कानमे फुसफुसा रहल छल ।

"लगैए, कोनो ऊपरी हवा लागि गेलनि ।।

किओ कहैत-"गेल घर छथि।"

एहि तरहेँ बड़ीकाल धरि धमाचौकरी चलिते रहल ।

ज्योतिषीजीक पत्नी बिआहक थोड़बे दिनक बाद मरि गेलथिन । हुनकर सभटा सेहन्ता धएले रहि गेलनि । मरितहि ओ प्रचंड रूप धेलनि । महाकालोकेँ ओकरा सम्हारब मोसकिल भए गेलनि ।

"एहन तँ आइ धरि नहि भेल छल । आब की होएत?"

महाकालकेँ एहि तरहेँ चिंतित देखि हुनकर सचिब बाजल-

"सरकार! बहुत परेसान बुझाइत छी ।"

"हौ! की कहिअह? एकटा तेहन ने उफाटू आबि गेलि जे सम्हरिए नहि रहल अछि?"

"ओ के थिक जे अहूँ सँ नहि सम्हरि रहल अछि? एहन आदमीकेँ तँ अवश्य देखबाक चाही ।"

"देखिए कए की कए लेबह? अखन ओकरा देखनाइ शुभ नहि होएत । ओ एखन बहुत उग्र अछि ।"

अपना भरि महाकाल अपन सचिवकेँ बुझेबाक बहुत चेष्टा केलाह मुदा ओकरो मोन ओतहि अटकि गेल रहैक । ओ महाकालक बात नहि मानलक । चलि गेल ओकरा लगीचमे। औ बाबू! ओ तँ आगि उगलि रहल छलि । ओकर हृदयक ताप जेना चारूकात अग्निवर्षा कए रहल छल । आब की होएत? महाकाल ठहाका पाड़लाह ।

"कहने रहिअह जे बँचि कए रहह परंतु तूँ हमर बात नहि मानलह । आब भोगह ।"

महाकाल बाजिए रहल छलाह कि ओ हुनकर सचिवपर चिचिआ उठलि-

" मूर्व! तूँ हमर दुख नहि बूझि सकलह । आइदिनसँ तूँ सुग्गा भए जाह ।"

से कहि ओ क्रोधमे आगिसन भेल हुंकार भरलक । चारूदिसामे प्रलयसन दृश्य भए गेल। देवता,गंदर्भ सभ चिंतित भए गेलाह।

"महाकालकेँ एना नहि करबाक चाहैत छलनि ।-किओ बाजल ।

"से की हुनका हाथमे छलनि । ओ तँ मात्र नियतिक हिसाब साफ कए रहल छलाह ।"-दोसर बाजल ।

"मुदा आब की होएत?"-तेसर बाजल ।

"नियतिकेँ गोहराओल जाए । तखने साइत मामिला सोझरा सकत ।"-पहिल बाजल ।

"तँ देखैत की छी । चलै चलू नियतिकेँ प्रार्थना करी नहि तँ प्रलय भए जाएत ।

सौंसे समाजक लोक मिलि कए नियतिक ओतए विदा भेलाह। एमहर महाकालक सचिव हुनका गोहराबए लागल-"हमरा बचाउ । हमरासँ बहुत भारी गलती भए गेल । जँ अहाँ नहि मदति करब तँ के करत ? अहाँ तँ सभकिछु जनैत छी ,सर्वशक्तिमान छी।"

"किओ सभकिछु नहि जनैत अछि । ई तोहर भ्रम छह । हम तँ तोरा चेतेलिअह मुदा तूँ अपन जूति चलेलह तखन आब हमरा की कहि रहल छह? "

से सुनितहि ओ आओर जोर-जोरसँ कानए लागल । महाकालकेँ बहुत दया आबि गेलनि। ओ बजैत छथि--

"ठीक छैक । तोरा सुग्गा तँ बनहि परतह मुदा हम तोरा अद्भुत शक्ति दए दैत छिअह जाहिसँ तँ भूत, वर्तमान आ भविष्य सभ बुझि, देखि सकबह ।"

'से तँ ठीक छैक मुदा सुग्गा बनि कए हम कोना जीव, हमर जीवन तँ व्यर्थ भए जाएत? मोनक सभ सेहेन्ता धएले रहि जाएत।"

"रातिमे तँ अपना हिसाबसँ जे चाहबह से बनि जा सकैत छह मुदा दिनभरि सुग्गेक रूपमे रहए पड़तह । एकटा आओर बात।"

"की?"

"ककरो ई बात कहिअहक नहि । जौँ ई बात ककरो पता लागल तँ तोहर सभटा शक्तिओ चलि जेतह आ सही मानेमे सुग्गे रहि जेबह ।"

" सरकार! हम किएक ककरो कहबैक । अहाँ हमर एतेक उपकार केलहुँ तकरा हम कोना सधा सकब?"

"सभ चीज आपस नहि कएल जाइत छैक । जे तोरा हाथमे छह से करिअह । "

"जे आज्ञा सरकार!"

एतेक बात भेलाक बादो सुग्गाकेँ माथपर चिंताक धारी बनले रहए जे महाकालकेँ पढ़ैत देरी नहि भेल ।

"की बात छैक? आबो तोरा परेसान देखि रहल छी?"

"कहबामे लाज होइत अछि मुदा अहाँकेँ नहि कहब तँ ककरा कहबै? के बूझत हमर बात?"

"फरिछा कए बाजह । एतेक समय हमरा नहि अछि?"

"हम रहब कतए?"

"जतए मोन होअए, उड़ि जेबह, एहिसँ नीक बात की होएत? -से कहि महाकाल हँसि देलाह । सुग्गा किछु बाजल नहि मोने-मोन बहुत दुखी रहए । महाकाल ई बात बुझलाह । कहैत छथि – "नीलमणि पर्वत तोरे कब्जामे रहत।" -से कहि महाकाल लुप्त भए गेलाह ।

"तहिआसँ ई सुग्गा ओहि पाकड़ि गाछपर बैसल रहैत अछि। बुझलिऐक ने बात ।"

मुदा ई पाकड़िक गाछ कम रहस्यात्मक नहि अछि । नहि तँ सुग्गासंगे एकर एहन घटजोड़ी थोड़े रहितैक ।

-17-

ओहि दिन गामक लोकसभ ज्योतिषीजी लग समाधान लेल गेल छल मुदा हुनका अस्तव्यस्त देखि ककरो किछु रस्ते नहि फुराइक । ज्योतिषीजीक हालत ठीक नहि रहनि । ओ अर्धमुर्क्षित अवस्थामे विमला,विमला बाजैत रहथि । देहपर सौंसे फोंकासभ भए गेल रहनि।

"हिनका किओ अगिनबान मारि देलकनि अछि ।-किओ बाजल ।

"हमरो सएह बुझा रहल अछि ।"-दोसर बाजल ।

"हमरा तँ किछु आओर बुझा रहल अछि ।-तेसर बाजल । एहि तरहें सभ अपन-अपन अनुमान लगा रहल छल । मुदा ज्योतिषीजी किछु कहबाक स्थितिमे नहि रहथि । लोकसभ उठापुठा कए ज्योतिषीजीकें घर लए अनलक । वैदकें बजा अनलक । वैद हुनका देखितहि बाजि उठल-"हिनका कोनो विमारी थोड़े छनि । ऊपरी हवा लागि गेलनि अछि ।"

"तकर इलाज की छैक?"

"से हमरो नहि बूझल अछि।"

वैद आपस चलि गेलाह । ज्योतिषीजी सुति गेल रहथि मुदा बड़बड़ेनाइ रुकबे नहि करनि। लोको सभ क्रमशः चलि गेल । कतेक काल धरि बैसल रहैत । साँझ भए गेल । घरमे डिबिओ नहि लेसल गेल छल ।

ज्योतिषीजीकेँ असगर रहब कोनो नव गप्प नहि छलैक । मुदा ओहिदिन ओ बहुत अस्वस्थ रहथि । ओहि समयमे हुनका कोनो होश नहि रहनि । ककरो ने ककरो ओतए रहक चाहैत छल। मुदा के रहैत ? सभ झोड़ा झाड़ि विदा भए गेल । असलमे वैदक बात सुनि सभ डरा गेल । तथापि ककरो रहब उचित छलैक। मुदा ई थिक स्वार्थी संसार । संकटमे लोकक अपन छाहों संग नहि दैत अछि ।

ई दृश्य विमला देखलथि । हुनकर उग्रता आओर बढ़ि गेल। ओ भयानक वेगसँ आएलि आ ज्योतिषीजीकेँ उठा-पुठाकए लेने चलि गेलि ।

-18-

ओहिदिन सुग्गा महाकालक देल नीलमणि पर्वतपर बैसल छलाह । ई एहनठाम छल जतएसँ सभलोक देखाइत छल । ओहिठाम मौसम सदरिकाल सोहनगर रहैत छल । सुविधाक अंबार लागल छल मुदा ताहि हिसाबे ओतए लोके नहि छल । एसगर

सुग्गा टाँय-टाँय करैत रहैत छल। ओ सोचलक जे ककरो तँ एतए रहबाक चाही जाहिसँ गप्पो-सप्प करब आ बेर-कुबेर मदतिओ होएत । ताहि उद्यश्यसँ ओ मंजुषा लग गेल । रातुक समय रहए । ओकरा इच्छाधारी वरदान रहैक । जतेक सुंदर बनि सकैत छल,से बनि गेल । राजनर्तकी मंजुषा ओकरा देखितहि आकर्षित भए गेलथि आ सुग्गा किछु कहैत,निवेदन करैत ताहिसँ पहिने अपनहि ओकरा लग सहटि कए आबि गेली । सुग्गाक मोन तँ गद-गद रहैक। मोने-मोन महाकालकेँ प्रणाम केलक ।

"धन्य छी अहाँ जे हमरा आइ एहन नीक दिन देखबाक अवसर भेटल।" -सुग्गा सोचलक।

मंजुषा सुग्गाक बात मानि ओकरा संगे नीलमणि पर्वतपर आबि गेलीह । चारूकात सुन्न,कतहु किओ नहि,से देखि हुनका मोनमे चिंता भेलनि । फेर भेलनि जे भए सकैए आओर लोकसभ फटकी होइक । ओना एक हिसाबे एकांत तँ नीके रहत। खूब रंग-रभस करब । सुग्गा दिनक समयमे उड़ि कए पाकड़ि गाछपर चलि अबैत आ साँझ होइतहि नीलमणि पर्वतपर चलि जाइत आ मंजुषाक संगे आनंद मनाबति । एहि तरहेँ बहुत समय बीति गेल।

एक राति सुग्गा राजकुमारक भेषमे मंजुषाक संगे प्रेमालाप कए रहल छल कि लगीचेमे मधुरस्वर सुनेलैक । सुग्गा बाहर निकलि देखलक तँ देखिते रहि गेल । बेस पैघ सामिआना लागल छल । ओहिमे जबरदस्त महफिल सजल छल । लगैत छल जेना कोनो शहरे उठि कए आबि गेल अछि । रातिभरि नाच-गान चलैत रहल । सुग्गाकेँ बुझेबे नहि करैक जे ई सभ के अछि आ एहिठाम केना आबि गेल । ओ एही सोचमे रहए कि मंजुषा सेहो बाहर आबि गेलीह । मंजुषा बाहर अबितहि ओकरासभकेँ चिन्हि गेलि । ओ

अपनो तँ एकरे सभक मंडलीमे काज करैत छलि। आब ओकरा चिंता होबए लगलैक जे जँ ओ सभ एकरा देखि लेलक तँ की होएत? कारण ओ तँ विना ककरो कहने सुनने सुग्गासँ मोहित भए ओकरा संगे चलि आएल रहैक ।

ई संसार रहस्यमयी अछि । ककरो किछु,ककरो किछु बूझल छैक ,संपूर्ण ज्ञान ककरा छैक? इएह कारण अछि जे एक-सँ एक पंडित,विद्वान एक-दोसरपर आक्षेप करैत रहैत छथि। जखन सुग्गा नीलमणि पर्वत पर गेल तँ ई थोड़े सोचने छल जे ई बात छैक। ओकरा लगलैक जे सौंसे नीलमणि पर्वत ओकरे नाम कए महाकाल चलि गेलाह । ओ जे चाहत करत,जेमहर चाहत घुमत आ कहि ने की की...। संयोगपर- संयोग होइत गेल । ने मंजुषा ओकर संग अबितथि ने ओतेक ओझरमे ओ पड़ैत । ओहिराति मंजुषाकेँ जखन लगीचेमे नाच-गानक ध्वनि सुनबामे आएल तँ ओ बाहर निकलि देखए लगलीह । ओहिमे मंजुषाक परिचित लोक तँ छलाहे मुदा किछु एहनो लोक छलाह जे पहिलबेर ओहि कार्यक्रममे आएल रहथि ।

भेलैक ई जे शरद,तिरपित,रागिनी,श्याम,प्रभुसभ गोटे ओहिदिन श्मशानमे बैसल आसपास होइत घटनाक्रम देखि रहल छलाह कि ज्योतिषीजीक पत्नी विमला हुनका लदने-फदने आबि गेलि। ओ ततेक क्रोधित रहए जे ककरो किछु पुछबाक साहस नहि भेलैक ।सभ ओकरा संगे विदा भए गेल ।ओकरासभकेँ एकाएक ओहिठामसँ हटलासँ एकटा शून्यता अएलेक जाहि कारण ओतए बिरड़ो उठि गेल । कै गोटे ओहि बिरड़ोकेँ देखलक ,मुदा असली बात तँ किओ नहि बूझि सकल,ने देखि सकल ।

ओ सभ विदा भए गेल । चलैत-चलैत कतहु सुसस्तेबाक इच्छा भेलैक तँ नीलमणि पर्वतपर रुकि गेल । ओहिठाम नाच-गान चलिए रहल छल । ओतए खेबा-पीबाक इंतजाम सेहो छलैक । ताहि बातसँ ओकरासभकेँ बहुत मदति भेलैक । ओ सभ गीतनाद सुनलक,खेलक,पिलक आ सामिआनाक पाछामे अड़कि गेल ।

-19-

तृप्तिवोधक अभावमे जन्म-जन्मसँ लोक बौआ रहल अछि। एहि अंतहीन यात्राक कहिओ अंत होइतो छैक कि नहि? की एहिना घिरनी जकाँ लोक घुरिआइत एहि लोकसँ ओहि लोक बौआइत रहैत अछि? किओ एहि बातकेँ फरिछा नहि पाबि रहल अछि । अपनेक सुधि नहि छैक तँ अनकर अटकर की रहतैक? जीवनभरि नानाप्रकारक लिप्साक वशीभूत भए तकर प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहैत अछि आ ताहीमे लागले रहैत अछि की महाकालक घंटी बाजि जाइत अछि। फेर शुरु होइत अछि अंतहीन यात्रा जकर गंतव्यक कोनो पता ककरो नहि रहैत छैक । जखन ककरो नहि रहैत छैक तँ हमरे कतएसँ होइत? हमहीटा नहि समस्त जीव-जन्तुक इएह हाल अछि। नियतिवश सभ चलिते जा रहल अछि ।

ओहि दुर्घटनामे हमर मृत्यु भए गेल । लोक सोचने होएत जे हमर खेल खतम मुदा से थोड़े होइत छैक । खेल चलिते रहल । पता नहि कोन-कोन लोकसँ हम गुजरि रहल छी । ककरा-ककरा सँ ने भेंट भए रहल अछि । तिरपित,शरद,श्याम,मंजुषा आ कहि ने के-के बौआ रहल अछि ।

ओहि दिन हम इएह सभ सोचैत रही कि सुग्गा हमरा सामनेमे आबि कए टर्र करए लागल।

"की बात छैक? बहुत बाजि रहल छह ।"

"पाकड़ि भाइ बजा रहल छथि । कहलाह जे जतए होथि कहबनि जे कनीको काल हेतु आबि जाथि । किछु जरुरी बात करबाक छनि ।"

हम सभकाज छोड़ि पाकड़ि गाछतर पहुँचि गेलहुं । जेठक दुपहरिआ रहैक । गामक कैगोटे ओहिठाम सुस्ता रहल छलाह । हमरा पहुँचितहि मेघ लागि गेल । पानिक फुहाड़ा खसए लागल । एहि मासमे एहन बरखा कमे देखल जाइत अछि । मुदा एहिसँ लोकसभकेँ बहुत राहत भेलेक । घामे-पसीने लोक त्राहिमाम कए रहल छल । तेहनमे बरखा होएब,मेघ लागब आओर हवो बहए लागब बहुत सुखद भेल । हमरा पाकड़ितर ठाढ़ किओ नहि देखलक,देखिओ नहि सकैत छल ।

हम पाकड़िक गाछ लग पहुँचले रही कि सुग्गा हमर स्वागत करए हेतु अएलाह ।

"बड़ नीक केलहुँ जे आबि गेलहुँ । पाकड़ि भाइ बहुत बेकल छथि । सदरिकाल अहींक चर्चा करैत रहलाह । हम बुझेबो करिअनि जे ओ जहन गछलाह अछि तँ अएबे करताह मुदा हुनका जेना बेचैनी भए गेल रहनि ।” हमरासभकेँ गप्प करैत देखि पाकड़िक गाछसँ आबाज आएल।

"अपनेमे गप्प करैत रहब कि एमहरो आएब?"

"अहीँसँ भेंट करए आएल छी ।"

"आउ, आउ, हम बाटे ताकि रहल छलहुँ ।"- पाकड़िक गाछ बाजए लगलाह ।

"कोनो खास बात?"

"हमरा अहाँ लेल भने खास बात नहि होइक मुदा ज्योतिषीजीक लेल तँ जरूरे खास बात छैक?"

"की भेलैक, से तँ कहू ।"

ओहिदिन ज्योतिषीजी बेकल भेल हमरा लग आएल रहथि। अपन पत्नीक वियोगसँ ओ कहिआसँ दुखी छथि । हुनका बारेमे जनितहि ततेक आवेग भेलनि जे ओ दुखित पड़ि गेलाह।"

"तखन?"

"तखन की । हुनका देखनाहर किओ नहि छल । हुनकर पत्नी विमला ताबे बौआइत ओतए पहुँचि गेलि आ ततेक उग्र भए गेलि जे की कहू? सभक सीटीपीटी गुम्म छलैक ।"

"एना किएक भेलेक?"

"विमलाक मरलो युग बीति गेल मुदा ओ एखनो ज्योतिषीजीक बाट ताकि रहल अछि । अतृप्त, अशांत भेल बौआइत रहैत अछि ।"

ओकरा शांत करबाक किछु व्योंत भए सकैत छैक कि नहि?"

" सुनैत छी जे गया जा कए प्रेतशीलापर पिण्डदान केलासँ मुक्ति भए जाइत छैक ।"

" हमरा तँ एहि बातमे बहुत जान नहि लागि रहल अछि । गयामे तँ आन धर्मक लोक नहि पिण्डदान करैत छथि तँ हुनकासभक की होइत अछि? की ओ सभ प्रेते रहि जाइत छथि ? फेर एकरा लेल गया जेतैक के? एकरा के छैक,जे से सभ करतैक?"

तैँ ने अहाँकेँ बजओलहुँ अछि । ज्योतिषीजी हमर बहुत सेवा केने छथि । हमरो किछु कर्तव्य बनैत अछि । ज्योतिषीजीकेँ जहिआसँ विमलासँ भेंट भेलनि दुनूगोटेक परेसानी बढ़ि गेलनि । विमला तँ ततेक उग्र भए गेल छथि जे महाकालो चिंतामे पड़ि गेल छथि । हुनका शांत करबाक भार ओ हमरा देलथि आ इहो कहला जे अहाँ हुनकर वंशज छिअनि । अहीं ई काज करी तँ उत्तम।"

"मुदा हम हुनकर वंशज छी तकर कोन प्रमाण?"

"महाकाल केँ ककर प्रमाणक काज अछि? ओ तँ स्वयं प्रमाण छथि।"

"से तँ ठीक मुदा हमर जिज्ञासा तँ स्वभाविक आ उचित अछि । जखन हम हुनकर पिंडदान करए जेबैक तँ मोनमे श्रद्धाक भाव तँ जरुरी अछि आ से तँ तखने आएत जखन सत्य बात हम बुझने रहब । अन्हारमे तीर चलओलाक कोनो फएदा नहि भए सकैत अछि ।"

“अहाँ हमर बातपर विश्वास करू । हमहु कोनो आइसँ ई सभ नहि देखि, सुनि रहल छी। जखन महाकाल स्वयं बाजि रहल छथि तँ अहिपर प्रश्न नहि उठक चाही ।"

"सबाल प्रश्नक नहि अछि, मोनकेँ मनाएब बहुत जरुरी अछि, नहि तँ हुनकासभक मुक्ति होनि नहि होनि हम तँ आओर ओझड़ा जाएब । अखन धरि हम ओहिना बौआ रहल छी, कहीं बौआइते नहि रहि जाइ ।"

"ओना बात तँ अहाँ वाजिब कए रहल छी ।"

ठीक छैक । पता लगबैत छी जे केना की भए सकैत छैक। फेर गप्प करब ।"

हमर पाकड़िक गाछ संगे गप्प चलिए रहल छल कि लागल जेना लगीचेमे ठनका खसि रहल अछि । चारूकातक भयानक अन्हर उठि गेल । लाखो तारा सभ चमकए लागल । लगलैक जेना एकहि संगे हजारो सूर्य उगि गेल हो । एहन परिस्थितिक कल्पना हम नहि केने रही । मुदा पाकड़िक गाछकेँ ई बूझल छलनि । ओ वारंबार हमरा चेता रहल छलाह । हमहु की करितहुँ । मोनकेँ संतुष्ट करबाक प्रयास कए रहल छलहुँ । एहन माहौलमे किओ हमरा पकड़ि कए जोरसँ धक्का देलक । हम बेसुध भए गेलहुँ । जखन होश भेल तँ हमरा लागल जेना कतेको सए बर्ख पाछा चलि गेलहुँ ।

-20-

हम मुकुंदपुरक देबाल लग ठाढ़ छलहुँ । हमर माता -पिता कतहुँ सँ आबि रहल छलाह। हुनकर स्वागत हेतु किछु आओर लोकसभ आबि गेल रहथि । हमरा देखितहि ओ सभ चिकरि उठलाह-"मनोज! एतेक दिन तूँ कतए चलि गेल छलह ? हमसभ कहिआसँ तोहर बाट ताकि रहल छी ।" माए बहुत शीघ्रतासँ हमरा दिस बढ़लीह। लगेमे पिच्छर रहैक। हुनकर संतुलन बिगड़ि गेलनि। ओ धराम दए खसलीह । हुनकर दहिना पैरमे चोट लागि गेलनि । हम दौड़िकए हुनका पकड़ि लैत छी । पाछूसँ हमर पिता अबैत छथि। हमसभ हुनका प्रणाम करैत छी । सामने एकटा चाह-पानक दोकान पर सुस्तेबाक हेतु बैसि जाइत छी । ओहि दोकानपर बैसले छलहुँ कि एकटा चिठ्ठी कतहुँ सँ खसैत अछि -

"आब बुझेलह कि आबो नहि बुझि सकलह? इएह छथि ज्योतिषीजी आओर हुनकर पत्नी विमला । "

चिठ्ठी पढ़ि कए हमरा सभटा बात मोन पड़ए लागल । पूर्वजन्मकक बातकेँ एना ओदारि कए राखि देव महाकालेक वशक बात छल । हुनका लेल की काल्हि आ की आइ । ओ समयक सीमाक ओहिपार ठाढ़ छथि। हमहु अहाँ ओही अनादि-अनंतक भाग छी । कालक प्रवाहमे हमसभ ओहिना बहि रहल छी जेना धारक तेज प्रवाहमे कोनो कागतक नाओ उबजुबाइत गलि जाइत हो, कै बेर ओहिपार पहुँचि जाइत हो । हमहु सभ सएह छी । करवन छी,केहन छी ,से मात्र एकटा संयोग अछि । सभ महाकालक चक्र छनि । लोक आएत,लोक जाएत मुदा ई कालचक्र निरंतर चलिते रहत । तैँ ने आइ सद्यः मुकुंदपुरक ई दृश्य देखि पाबि रहल छी ।

ज्योतिषीजीकेँ तहिओ लोक ओही नामसँ जनैत छलनि। ओ गणितक प्रकाण्ड विद्वान छलाह । इसकूलसँ सटले एकटा पैघ मंदिर छल । हम पहुँचले रही कि ओहि मंदिरसँ किछुगोटे बाहर होइत चिचिआ रहल छलाह -" जय महाकाल! जय महाकाल !"

हुनका लोकनिक हाथमे मसाल छल जे रंग- रंगक प्रकाश उतपन्न कए रहल छल । सभक आगू,आगू अत्यंत सुंदरि युवती छलीह,तिनका पाछा-पाछा पचासो गोटे चलि रहल छल । हमरापर प्रकाश पड़ितहि ओ चिचिआ उठलीह- -

"आउ, आउ । अहाँ बहुत समय लगा देलिऐक ।"

"अहाँ के छी?"

हम छी एहिठामक राजकुमारी निशा ।"-से कहि ओ अपनासंगे हमरा अपन रथपर बैसा लेलथि आ कहैत छथि- “चलू,अहाँकेँ अपन राजमहल देखबैत छी ।"

हम हुनकर संगे विदा भए गेलहुँ । पाछू-पाछू हुनकर अंगरक्षकक दल चलि रहल छल ।

"मुदा हम अहाँकेँ नहि चिन्हि रहल छी ।"

"हम तँ कहिआसँ अहाँक बाट ताकि रहल छी । अहाँकेँ कोना मोन पड़लहुँ सएह आश्चर्य लागि रहल अछि ।"

"हम तँ एहिठाम महाकालक आदेश मानि अएलहुँ अछि ।"

"जेना आएल होइ । अएबाक अएबे केलहुँ मुदा हमर सभ गति कए देलहुँ ।"

" से की?"

"आब की कहू? जखन अहाँकेँ किछु मोने नहि अछि तँ सभ बेकार थिक ।"

" अवश्य कहू । भए सकैत अछि एहूमे महाकालेक कुछु फेरी होइक ।"

"से तँ छैके । नहि तँ एना हेबे किएक करितैक?"

हमसभ गप्प कइए रहल छलहुँ कि मह-मह करैत सरबत लए हुनकर सेविका आबि गेलीह । निशा अपने हाथे भरल गिलास हमरा पकड़ा देलथि । हम दुनूगोटे गट-गटकए ओकरा पीबि गेलहुँ। ओह! अद्भुत स्वाद छल । दिव्यरसोसँ बेसी मादकतासँ भरल छल। से पिबतहि हमरा जे भेल से कहब मोसकिल । हम मदहोश भए गेलहुँ । आ निशा,ओ तँ ततेक प्रशन्न छलीह जकर वर्णन करब कठिन । संभवतः ओ एहि रसपानक अभ्यस्त छलीह ।

"ई की थिक।"

"हदे भए गेल । हम-अहाँ तँ ई सदरिकाल पिबैत छलहुँ ।"

"ऐँ! हमरा तँ किछु मोन नहि पड़ि रहल अछि । पहिने तकर किछु व्योंत करू ।"

"अगुताइ नहि । जखन आबिए गेलहुँ अछि तँ सभटा सुविधा होएत । एहिठामक सभ्यता आ विज्ञान बहुत आगू अछि।"

"ओ हमरा तँ आब बहुत आनंद लागि रहल अछि ।"

इएह तँ मुक्तिरसक विशेषता थिक।"

एकटा बात बुझलिऐक जे चाहे नाम जे होइक,स्वाद जेहन होइ,मुदा सभलोकमे कोनो-ने-कोनो रसपानक परंपरा अछि। पृथ्वीक मदिरा वा अपना ओहिठामक ताड़ी भने दिव्यरससँ फराक होउक,किंवा एहिठामक मुक्तिरस हो ,काज सभ एकहि रंगक करैत अछि । लोक एकरा पीबि कए बिसरभोर भए जाइत अछि आ जे मोनमे गड़ल रहैत छैक तकरा निकालि उसासक अनुभूति करैत अछि ।

हम अनेको लोकसँ गुजरि गेलहुँ । ओहि बीचमे हजारो सालक फासला छल । मुदा जतहि गेलहुँ लागैत रहल जेना सभकिछु एखने भेल होअए । की विचित्रता थिक से बुझब मोसकिल अछि । संभवतः वैज्ञानिकसभ सेहो एही रहस्यक सोझराबएमे लागल रहैत छथि । मुदा महाकालक एहि रहस्यकेँ बुझनाइ सोझ बात नहि छैक । एतबा तँ तय बात अछि जे कोनो लोक होइ, महाकालक प्रभावसँ किओ बाँचल नहि अछि ।

मुक्तिरस पीबि कए हम बेसुध भेल राजकुमारी निशाक संगे गप्प करैत -करैत करवन सुति रहलहुँ किछु नहि बुझलिऐक । भोरे ओ फेर ओहि मंदिर जाइत रहथि तँ हमरो उठओलथि। हम बहुत आलस्यमे छलहुँ । तथापि जल्दी -जल्दी तैयार भए हुनके संगे मंदिर विदा भेलहुँ । निशाक संगे हुनकर सिपहसलार सभक हुजुम चलि रहल छल । मंदिर लग पहुँचले रही कि लागल जेना आसेपास ठनका खसल । ठनकाक आबाजसँ हतप्रभ हम ठामहि थमकि गेलहुँ । आँखि खोलैतछी तँ देखैत छी जे महाकालक मंदिरक सामनेमे ओ स्वयं ठाढ़ कहैत छथि-

"तूँ एहिठाम आएल छलह की करए आ कए की रहल छह?"

"हमरा तँ किछु नहि बुझा रहल अछि ।"

से कहि हम महाकालक मंदिर दिस बढ़लहुँ।

महाकाल हमरा दिस बढ़ए लगलाह कि निशा बीचमे आबि गेलीह ।

"अहाँ हमर सोहागकेँ हमरासँ नहि छीनि सकैत छी ।"

"हम ककरो किछु नहि करैत छी । सभ नियतिक खेल थिक ।"

"नियतिकेँ कतहु आनठाम पठाउ, हम अपन नियति स्वयं तय करब ।"

"एहनो कहीं भेलैक अछि?"

"एहिबेर सएह हेतैक ।"

से कहि निशा हमरा लेने मंदिरसँ बिना पूजा केनहि चलि जाइत रहलीह । महाकाल कतए गेला,किएक गेला किछु पता नहि चलि सकल ।

मुकुंदपुर शहरक अपन इतिहास अछि । एतए एक सँ एक राजा भेलाह । पढ़ाइ-लिखाइ,नृत्य-संगीतमे एहिठामक लोक माहिर छल । वच्चासभक विशेष ध्यान राखल जाइक,कारण एहिठामक जनसंख्या बहुत कम छल । महाकालक चेतौनीक बाद हमर कान ठाढ़ भेल । बहुत मोसकिलसँ निशासँ जान छोड़ाकए हम भोरे-भोर महाकालक मंदिरक करोटमे बनल इसकूल पहुँचि गेलहुँ । ओहिठाम हमरा ज्योतिषीजी,हुनकर पत्नी विमला भेटलीह। ओ सभ हमरा देखि बहुत प्रशन्न रहथि । कहए लगलाह-

"हमसभ कतेक निहोरा केलहुँ, कतेक मनेलहुँ जे अहाँ कतहु नहि जाइ, हमसभ आब बूढ़ भए गेल छी, हमरासभक सेवा करू मुदा अहाँकेँ निशाक संगे तेहन ने रमलहुँ जे किछु सुध-वुध नहि रहल । आब आबिए कए की होएत? हमरा सभकेँ अपन किछु नहि अछि, देहो नहि ।"

"से कोना भए सकैत छैक?"

"सएह सत्य छैक बौआ । महाकालक महिमा अपरंपार छनि ।"

"की केना भेलैक, से तँ बुझिऐक?"

"की करबै बुझि कए?"

"हम एतेक दूरसँ एही लेल आएल छी ।"

"भने महाकालक शरणमे गेल छलहुँ । ओतहि चलि जाउ । अपने सभटा बुझि जेबैक ।"

हुनकासभकेँ एहि तरहेँ उदास देखि हमरा मोनमे बहुत कष्ट भेल । मुदा कइए की सकैत छलहुँ ? जतहि जाइत छी रहस्यक नव शृंखला शुरु भए जाइत अछि । हम ओहिठामसँ महाकालक मंदिर दिस पैरे विदा भेलहुँ। रस्तामे अपना गामक कै गोटे देखेलाह । हमरा देखितहि सभ चिकरए लागल-

“आउ, आउ, अहाँ ऐन मौकापर आबि गेलहुँ ।"- हम हुनकर सभक बात सुनि ओतहि ठमकि गेलहुँ ।

"की सोचि रहल छी?"

ऊपरसँ आबाज आएल ।

"अहाँ के छी आ हमर पछोड़ किएक केने छी?"

" बेरि-बेरि ई बात किएक बुझबए पड़ि रहल अछि? हम महाकाल छी । हम ककरो पछोड़ नहि करैत छी ।"

"तखन?"

"सभ अपने हमर प्रभावसँ उलट-पलट होइत रहैत अछि आ लगैत छैक जे ओकरा किओ पछोड़ कए रहल छैक ।"

"अहाँक बात बूझब हमर वशमे नहि लागि रहल अछि ।" से सुनितहि महाकाल जोरसँ ठहाका पाड़ैत कहलाह-

"तखन नीकसँ बुझिए लएह । "

महाकाल से बाजि लुप्त भए गेलाह । महाकालकेँ जाइते एहिठाम घटित घटनासभ एक-एक कए सामने आबए लागल ।

-22-

मुकुंदपुरक एकटा छोट गाममे ज्योतिषीजी आ बिमलाक हम एकमात्र संतान छलहुँ । बहुत प्रेमसँ ओ सभ हमर शिक्षाा देलाह। पढ़ाइ समाप्त होइतहि हम राजाक ओहिठाम नौकरी लागि

गेल। राजाक एकमात्र बेटी छल निशा । जेहने देखबामे सुंदर ,तेहने विनम्र व्यवहार । लगबे नहि करैत जे ई राजपरिवारक अछि । राजा-रानी अपन एकमात्र संतानक हेतु सभतरहक सुविधाक अंबार लगओने रहैत छलाह । कोनो तरहक रोक-टोक नहि । जे चाहत निशा से बुझू राजाज्ञा भए गेल। बहुत दुलारसँ निशा पालल गेली ह। राजा-रानी करबो की करितथि? लाख कोशिश केलथि बेटा नहि भेलनि । तखन जे भगवान देलखिन ताहीसँ संतोख केलाह ।

कहबी छैक जे कोनो वस्तु एकहिसाबेसँ नीक होइत छैक। राजा-रानी अपन एकमात्र संतान हेतु सुख-सुविधा जुटबैत रहलथि। एतबा धरि तँ ठीक छल । मुदा ओ सभ ओकर जिद्दक आगा नाजायज मांग सेहो मानैत गेलाह । जँ ओकरा मोनमे किछु बात आएल तँ कोनो हालतमे हेबाक चाही ,चाहे परिणाम जे होइक। एकतरफा दुलारसँ ओ जिद्दी भए गेलि ।

राजाक ओहिठाम हम काज प्रारंभ केलहुँ । शुरुमे किछु बुझबे नहि करिऐक । हमर काज सोझे महारानी देखैत छली । हुनकर महलक देखभालक जिम्मेदारी हमरा देल गेल । सैकड़ों कर्मचारी ओतए महारानीक सुख-सुविधाक व्यवस्थामे लागल छल। हमरा जे काज देल जाइत से हम मनोयोग पूर्वक करी कारण हमरा कोनो आओर साधन नहि छल । नौकरी करब एकटा अनिवार्यता छल ।

हम नित्य भोरे काजपर जाइ । हमर हाकिम छलाह - श्याम। ओ राजमहलक प्रमुख व्यवस्थापक छलाह । श्यामक संगे हुनकर पुत्र शरद सेहो कहिओ-काल आबि जाइत छलाह । ओहि समयमे शरद हमर पिताक इसकूलमे गणितक विद्यार्थी छलाह । पढ़ाइ-लिखाइक पद्धति आइ-काल्हिसँ अलग छल । ऐकबेर जे

विद्यार्थी अबैत से पूरा शिक्षा लेलाक बादे ओतएसँ जाइत। ताहि हेतु ओकरा सभप्रकारक सुविधा देब राजाक जिम्मा होइत छल । शरद पढ़ाइमे नीक करए लागल । ताहिसँ प्रशन्न भए ज्योतिषीजी ओकर नामे छात्रबृतिक जोगार हेतु राजा लग प्रस्ताव पठओलाह। राजा ज्योतिषीजीकेँ बजओलखिन आ शरदक बारेमे सभ बातक जानकारी लेलाह । हुनका मोनमे शरदसँ भेंट करबाक उत्सुकता भेलनि । ओ इसकूलमे समाद देलखिन जे शरदकेँ अगिला मंगल दिन भोरे दरबारमे आनल जाए । राजाज्ञा छल । हुनका एबेक छलनि,से अएलाह।

संयोगसँ हमहु ओहीठाम किछु काजसँ गेल रही । निशा आ रानी सेहो सभामे उपस्थित रहथि । ओना सामान्यतः ओ सभ राज्यसभासँ फराके रहैत छलीह मुदा ओहिदिन राजा स्वयं हुनकोसभकेँ बजओने रहथि । शरदक प्रतिभाक समाचार दूर-दूर धरि पसरि गेल छल । ओ लगातार अपन कौशलक परिचय दैत रहैत छलाह जाहि कारणसँ राजा सेहो प्रभावित भेलथि आ हुनकासँ भेंट करबाक जिज्ञासा भेलनि । शरदकेँ राजसभामे अबितहि निशाक ध्यान हुनकापर गेलनि । शरद जतबे पढ़बामे तेजगर छलाह ततबे सुन्नर । पहिले भेंटमे निशाकेँ ओ आकर्षित कए लेलथि।

राजा हुनकासँ बड़ीकाल धरि गप्प करैत रहलाह । हुनका बारेमे तरह-तरहक जानकारी लैत रहलाह । अंतमे निशा हुनका कानमे किछु कहलखिन । राजा हँसए लगलाह । असलमे निशा चाहैत छली जे शरद राजमहलमे नौकरी करथि मुदा तत्काल ई संभव नहि छल कारण शरदक शिक्षा अखन चलिए रहल छल । निशा अड़ि गेलखिन । हारि कए राजा शरदक पिता श्यामकेँ अपन

महलमे भेंट करबाक हेतु बजओलथि। राजाक बात नहि मानबाक कोनो प्रश्ने नहि छल । श्याम तैयार भए गेलाह । बीचक रस्ता निकालल गेल जाहिसँ शरदक पढ़ाइओ चलैत रहनि आ राजाक इच्छोक सम्मान भए जानि । राजाक इच्छा की,असलमे तँ निशाक जिद्द छल जकरा आगू राजाक कोनो तर्क नहि चलैत छल।

तय ई भेल जे दिनभरि ओ इसकूल जेना जाइत छथि से जाइते रहताह । साँझमे राजमहाल अओताह आ घंटा-दूघंटा निशाकेँ पढ़बामे मदति करताह । ई काज शुरु तँ भए गेल मुदा निशा शरदकेँ कै दिन कोनो-कोनो बहाना बना कए ततेक देरी कए देथि जे हुनका अपन घर आपस जाएब मोसकिल भए जाए । तखन ओ की करितथि? ओतहि राजमहलमे हुनका एकटा कोठरी दए देल गेल। ओहीमे रहि जाथि । शरद एसगर कोना रहितथि । तेँ हुनक पिता सेहो हुनके संगे राजमहलेमे रहए लगलाह ।

राजाक एतेक लगीचमे रहबामे हुनका डर होनि । कारण जँ कोनो बातपर ओ बिगड़ि गेलाह तँ जानो जा सकैत छल । लगमे रहलापर एहन संभावना बढ़ि गेल छल । मुदा करितथि की ? निशा राजाक दुलारु बेटी । हुनका के रोक-टोक करैत? जखन मोन होनि शरदकेँ बजा लेथि आ ओकरासंगे रंग-रभस करैत रहितथि । जखन ओ इसकूल चलि जाइत तँ हमरा बजा लेथि । हम दिनभरि हुनके लग किछु-किछु करैत रही । राजा-रानीकेँ ई सभ पता रहनि। हुनकर जासूससभ सदिखन हमरासभक पछोड़ करैत रहैत छल आ राजा-रानीकेँ सूचना दैत रहैत छल।

-23-

कालचक्र तेहन घुमल जे मुकुंदपुरक आस्तित्वे संकटमे पड़ि गेल । संपूर्ण अंतरिक्ष वारंबार हिलि रहल छल । महाप्रलयक दृश्य उतपन्न भए गेल छल । देखितहि-देखितहि बहुत जोर अन्हर आएल । सौंसे मुकुंदपुरमे हरबिरड़ो मचि गेल। जकरे देखू,सएह भागि रहल छल। अन्हरकसंगे बरखा से जोर पकड़ने छल । देखिते-देखिते चारूकात पानि भरि गेल । लोकसभ त्राहिमाम, त्राहिमाम कए रहल छलाह मुदा ककरो,केम्हरो ससरबाक व्योंत नहि छल । हालत ततेक खराप भए गेल जे एकहि शहरमे एकठामसँ दोसर ठाम जेबा हेतु नाओक काज पड़ए लागल । कै दिन धरि एहि प्रलयकारी दृश्यक अंत हेबाक कोनो लक्षण नहि छल। मुकुंदपुरमे लोक सभ एहन विचित्र दृश्य पहिने नहि देखने रहथि । हम राजमहालमे आएल रही से आपस नहि जा सकलहुँ । शरद किछु काजसँ बाहर गेल रहथि से घुरल नहि रहथि। जखन अन्हर आएल तँ इसकूलमे किलास चलि रहल छल। विद्यार्थीसभ यत्र-तत्र भसिआ गेल ।

ज्योतिषी जी आ हुनकर पत्नी विमला महाकालक मंदिर दिस भागल रहथि,मुदा से महाकालकेँ मंजूर होनि तखन ने? ओ सभ कतए गेलाह,की भेलनि किछु पता नहि चलि सकल। पता लगबितो के ? एहि तरहेँ प्रलयकारी अन्हर आ बरखासँ सौंसे शहर बहि गेल। राजमहालकेँ बचेबाक सभ प्रयास व्यर्थ चलि गेल ।

शहरक बीचमे पाकड़िक गाछ छल । अन्हरमे ओ जड़िसँ उखड़ि जहाँ-तहाँ फेका गेल। लगातार बरखासँ मुकुंदपुर शहर

निपत्ता भए गेल । कतहु किछु नहि बाँचल । ई एकटा संयोगे छल जे पाकड़ि गाछ अन्हरमे दहाइत केना-ने-केना हमर गाम लग पहुँचि गेल । एहि प्रलयक चर्च दिव्यलोकमे सेहो भेल । हेबेक रहैक । कोनो मामुली काण्ड तँ रहैक नहि जे अंठा देल जाइत। महाकाल हाल-चाल लेबए विदा भेलाह । सभक ध्यान ओना हुनकेपर छलनि कारण ओ कखन कोन पल्टी लेताह आ केमहर प्रलय भए जाएत तकर कोन ठेकान?

ओहि प्रलयमे उधिआइत, खसैत-पड़ैत पाकड़िक गाछ मौजपुर आ लखनपुरक सीमापर जा कए अड़कि गेल। मुकुंदपुर शहरक कतेको जीव-जन्तु ओही गाछक संगे चलि आएल । आओर जे आएल से आएल कतेको लोकक आत्मा सेहो ओही गाछपर अड़कल छल ,मुक्त नहि भए सकल छल,सेहो सभ ओहि गाछक डारिसभ पर लटकल रहि गेल । के ककरा मुक्त करैत? तेहन भारी प्रलय भेल जे ककरो पिण्डदानो नहि भए सकल । अनकर कोन कथा, ज्योतिषीजी आ हुनकर पत्नी सेहो ओही गाछक डारिपर भुखल-पिआसल पड़ल छलाह ।

संयोगसँ महाकालक ध्यान पाकड़िक गाछपर पड़लनि ।

"की बात अछि, अहाँ बहुत परेसान छी ।"- पाकड़ि गाछकेँ अपसिआँत देखि महाकाल बजलाह ।

" जहिआसँ मुकुंदपुरमे प्रलय भेल हम घुमिए रहल छी । कतहु ठौर नहि भेटल । जेना-तेना मौजपुर लग ठहरि गेलहुँ । तखनसँ ओहिना छी। हमर जे हाल भेल अछि से अहाँ देखिए रहल छी । अहाँसँ की झाँपल अछि । "

"चिंता नहि करू । जहिना विनाश देखलिऐक अछि, तहिना सृजनो देखबैक । -से कहि महाकाल विलुप्त भए गेलाह ।

आश्चर्यक गप्प थिक जे एतेक झंझावातमे पाकड़िक गाछ बँचि गेल आ मौजपुरक अनुकूल वातावरणमे फेरसँ हरिआ गेल।

-24-

कहल जाइत अछि जे समय कैटा समस्याक इलाज स्वयं कए दैत अछि । समय बितलापर कतेक रास बातसभ बिसरा जाइत अछि । लोक नव-नव कल्पनाक सृजनमे व्यस्त भए जाइत अछि । सएह एतहु भेल । पाकड़िक गाछ आ ओहिपर बैसल तमाम जीव-जन्तुसभ अपन दुखसभ बिसरि जीवनक व्योंतमे लागि गेल। सुग्गा कोनो एसगरे तँ रहथि नहि ,ओहि गाछपर कतेको आत्मा लटकल छल । सभ कोनो-ने-कोनो रूपमे मौजपुर आ आसपासक गाममे जन्म लेलाह ।

महाकालक चक्र आगा घुमल ।

पाकड़ि गाछ लग बैसले-बैसल हमरा पूर्व जन्मक इतिहासक जानकारी भेटल । हम एहिबातसँ आश्वस्त भेलहुँ जे ज्योतिषीजी आ हुनक पत्नी विमला हमर पूर्व जन्मक माता-पिता छथि । हुनकासभक पिण्डदान करबाक हेतु हम गया प्रस्थान केलहुँ। ताबे समय बहुत बदलि गेल छल । गया जेबाक हेतु बहुत रास साधन भए गेल छल । हबाइ जहाजक तँ ओतए अंतरराष्ट्रीय अड्डा भए गेल छल । रेलगाड़ी,बस सँ सेहो बहुत रास यात्रीसभ ओतए अपन पूर्वजक पिण्डदानक हेतु अबैत छथि ।

हम गया बिदा भेलहुँ । कोना जाएब गया? हम ई सोचिते रही कि महाकालक स्वर सुनबामे आएल-

" हद भए गेल । अहाँकेँ कोन पाँच हाथक देह अछि जकर चिंता कए रहल छी ।

"तखन?"

"तखन की? हमरे संगे चलू ।"

"जे आज्ञा।"

हम महाकालक संगे किछुए कालमे गया पहुँचि गेलहुँ । मोनोसँ बेसी तेज हिनकर चालि छल ।

"आब की सोचि रहल छी?"

"की कहू । हम तँ गुम्म छी ।"

महाकाल ठहाका पाड़ए लगलाह । कहैत छथि-

“आओर जे होइ मुदा अहाँ छी बेस रमनगर लोक ।"

"एहिमे हँसबाक कोन गप्प भेलैक? हम तँ पाकड़िक गाछ आ ताहिपर बैसल सुग्गाकेँ एतए देखि परेसान छी आ अहाँ ठहाका पाड़ि रहल छी ।"

हमर महाकालक संग चर्चाकेँ पाकड़िक गाछ बहुत ध्यानसँ सुनैत रहथि । कहैत छथि-

"हम तँ अहींक मदति लेल आएल छी । सुग्गाकेँ अहाँक बहुत चिंता भेलैक । कहए लागल तँ सोचलहुँ जे किएक ने किछु मदति करी । आखिर हमर पुरान संगी छलाह ज्योतिषीजी आ अहाँ हमरे कहलापर हुनकर पिंडदान करबाक हेतु आएल छी ।"

“सुग्गो आएल छथि? कतहु देखा नहि रहल छथि ।"

हम एतबा बाजले रही कि पाकड़िक गाछपर सुग्गा टाँय-टाँय करए लगलाह -"हम बैसल-बैसल उबि रहल छलहुँ तँ कनी अपन संवंधीसँ भेंट करबाक हेतु चलि गेल रही ।-सुग्गा बजलाह।

"ओ के छथि?"

"अपने बुझि जेबैक । से कहि सुग्गा उड़ि गेलाह । हम थाकि गेल रही । पाकड़िक गाछ ई बात बुझलाह । कहैत छथि-

" कनी काल एतहि छाहरिमे सुस्ता लिअ । फेर आगाक काज करब ।"

"एहि रौदमे सुग्गा कतए चलि गेलाह?"

"ओकर सासुर एतहि छैक ने ।"-से कहि ओ हँसए लगलाह।

हमरो हुनका हँसैत देखि हँसा गेल ।

"कतए छैक ओकर सासुर?"

"अहूँकेँ खोदवेद करबाक बहुत आदति अछि ।- से कहि ओ हमरा दक्षिण दिस इसारा केलाह ।

-25-

गया पहुँचितहि ओहिठामक पंडासभकेँ आपसमे घोंघाउज करैत देखलिऐक ।

" ई हमर जजमान छथि । हिनकर कै पुस्त हमरा ओहिठाम आबि रहल छथि ।"-एकटा पंडा बाजल ।

"की बात करैत छह । बाबा सभक बटबाराक बाद ओ सभ हमरा सभक जजमान भए गेल रहथि ।"-दोसर पंडा बाजल ।

"तूँ दुनूगोटे जानि-बुझि कए झूठ बाजि रहल छह । ई सभ तँ हमर जजमान छथि। हिनकर पिता हमरे ओहिठाम आएल रहथि। नहि विश्वास होअ तँ खातामे देखि लएह ।"-तेसर पंडा बाजल । तीनूमे झगड़ा नहि फरिछाइत रहैक कि टीसनपर ठाढ़ दलाल सभ हाथमे लठ्ठ लेने दौड़ल ।

"तोरासभक नित्यक इएह लफड़ा रहैत छह । आइ सभदिन हेतु एकरा खतम कए दैत छिअह ।"-किओ दलाल बाजल

आ लाठी लेने आगा बढ़ल । पंडासभ इएह ले वएह ले भागल। दलालसभ ओकरासभकेँ खिहाड़ि रहल छल । एहि दृश्यकेँ देखि हम ओहिठामसँ घसकबाक जोगार मे रही । ताबते मे एकटा दलाल हमर गट्टा धेलक ।

" के छी? आ कतए सँ अएलहुँ अछि?"-ओ बजैत अछि ।

हम की कहितिऐक? दिन-राति तँ ओ सभ भूतेक काज करैत रहैत छल । ओकरा किछु अखिआस भेलैक । हमर पैर दिस देखलक । हमर पैर उल्टल छल । देहक कोनो अत्ता-पत्ता नहि । ओ डरा कए भागल आ भागिते रहि गेल ,घुरि नहि तकलक । जाइत -जाइत पंडासभक घर लग पहुँचल । तीनूपंडा सरदार पंडालग खाता खोलने छलाह । तीनू खातामे हमर पूर्वजक नाम रहनि । आब की होइत । सरदारपंडा कहलखिन जे हमही एहि जजमानक काज करब । हुनकर आगा किओ किछु नहि बाजि सकल । सरदार पंडा हमरा कहैत छथि-

"ई सभ अखन अनाड़ी छैक । हम अहाँक पिंडदान स्वयं कराएब । मुदा खर्चा बेसी लागत ।”

"कतेक लगतैक?"-हम बजलहुँ ।

“एतए पिण्डदान कोनो एकठाम होइत छैक से बात नहि छैक । सौंसे शहारमे ठाम-ठाम कतेको स्थान चिन्हित कएल गेल अछि जतए तरह-तरहक मंत्र पढ़ि-पढ़ि मृत व्यक्तिक प्रेतयोनिसँ मुक्तिकहेतु पिण्डदान कएल जाइत अछि ।”

सरदारपंडा एतबा बाजले रहथि के दलाल हाँफैत ओतए पहुँचल । सरदार पण्डाकेँ हमरासँ गप्प करैत देखि ओ चिकरल -

"भागू, भागू ।"

"की भेलैक?"

" देखि नहि रहल छिऐक जे हमरा पुछि रहल छी?"

"फरिछा कए बाजह । बुझौअल नहि बुझाबाह ।"

" अहाँ साफे सठिआ गेलहुँ । देखैत नहि छिऐक जे एकर पैर उल्टल छैक? देहक कतहु अता -पता नहि छैक ? ई तँ साक्षात प्रेत अछि ।"

से सुनितहि सरदार पंडा भागल । ओ भागिए रहल छल कि कहि नहि कहाँसँ एकटा साँढ़ चिकरैत-भोकरैत ओकरा सामनेमे आबि गेल । साँढ़ सरदारपण्डाकेँ उठाकए पटकि देलक। ओकरा दाँती लागि गेलैक । आसपास लोकसभ जमा भए गेल । ओ तीनू पंडा सेहो आबि गेल।

" ई अछिओ बहुत दुष्ट । दिन-राति बैमानीमे लागल रहैत अछि । लएह आब, भोगह।"-एकटा पंडा बाजल ।

" एकर कोन दोख? हमहीसभ ने एकरा मौका देलिऐक । आपसमे फरिछा लितहुँ तखन एना थोड़े होइत ।"-दोसर पंडा बाजल ।

"बँचि गेलहुँ । एहिमे तँ बड़ लफरा छैक ।"-तेसर पंडा बाजल ।

अहाँसभ केहन लोकसभ छी । पहिने हिनकर इलाजक ओरिआन करू, फेर घमरथन करैत रहब ।"-ओहिठाम जमा भीड़मे सँ किओ बाजल ।

लोकसभ सरदारपंडाकेँ उठापुठा कए घर पहुँचा देलक ।

ताबे हमहुँ ओतए पहुँचि गेलहुँ । ओतए सुग्गा पहिनेसँ पहुँचल रहथि।

"अहाँ कखन अएलहुँ?"-हम पुछलिऐक ।

"अहाँकेँ तँ पाकड़ि भाइ कहनहि छल ।”

"नहि मोन पड़ि रहल अछि । अहीँ कहि दिअ।"

“ई हमर सासुरक लोक छथि । "

सुग्गाक बात सुनि कए हमरा आओर किछु नहि फुराएल।

-26-

गया आबि तँ गेलहुँ मुदा एहिठाम पिंडदान मोसकिल बुझा रहल छल । हमरा देखितहि जकरे देखू घर बंद कए लैत छल । फल्गुमे तँ लोकक मिस्स पड़ि रहल छल । तरह-तरहक लोक आ ततबे तरहक पंडासभ पितरसभकेँ पिंडदान करेबामे व्यस्त छलाह। जखन कोनो पंडा हमरा लग ठाढ़ हेबाक हेतु तैयार नहि भेल तँ थाकि कए हम एसगरे प्रेतशिलापर चढ़ि गेलहुँ । औ बाबू! एहिठाम पैर धरितहि चारूकातसँ प्रेतसभ हमरा दिस दौड़ल । जेना कुकुरकेँ देखि कए दोसर कुकुर भुकए लगैत छल । सएह हाल हमर भए गेल। चारूकातसँ प्रेतसभ हमरा गोलिआ लेलक।

गजब हाल छल । गयामे नित्य एतेक पिण्डदान होइत रहैत अछि तथापि प्रेतसभ एतहि रने-बने बौआ रहल अछि । भूतक पथार लागल अछि । पंडासभ जे एतेक मंत्र -तंत्र करैत रहैत छैक तकर कोनो फएदा नहि बुझा रहल अछि । सभ भूत तँ ठामहि पड़ल अछि । प्रेतशिलापर कनीके आगू बढ़ले रही कि एकटा बेस सुन्नर,गोर-नार स्त्रीकेँ जोरसँ मुड़ी झारैत देखलहुँ । चारूकातसँ पंडा ओकरा घेरने मिरचाइक झोंका दए रहल छल । मंत्र पढ़ि रहल छल। तैओ ओ स्त्री काबूमे नहि आबि रहल छलैक ।

"बड़ जोरगर प्रेत पैसि गेल छैक ।"-पंडा बाजल ।

"किछु करिऔक, हमसभ बहुत परेसान छी ।"-ओहि स्त्रीक पति बाजल ।

"देखिए रहल छी जे मामिला कतेक कठिन अछि । अपना भरि प्रयास तँ कइए रहल छी। किछु अहूँ करऔक ।"

"जे कही, से करबाक हेतु हमसभ तैयार छी । मुदा एकरा प्रेतवाधासँ मुक्त कराउ।"

पण्डासभ तरह-तरहसँ ओहि स्त्रीक भूत झाड़बाक व्योंतमे लागल छल । हम प्रेतशिलापर ऊपर चढ़ए लगलहुँ । कनीके आगू बढ़ल छलहुँ की सुग्गाक आबाज बुझाएल । सरदार पंडा बँचि गेलाह । संयोगसँ समयपर इलाज भए गेल । हम ओहीसभमे व्यस्त भए गेल रही ।-सुग्गा बाजल ।

" कतेक दिनपर एकटा नीक समाचार भेटल ।"

"आब अहाँ आइ रूकि जाउ । काल्हि हम हुनके पठा देबनि । ओ अहाँक काज करा देताह ।"

"ठीक छैक ।"

हम सुग्गाक बात मानि आपस होइत रही कि ओहि स्त्रीकेँ एकटा पण्डाक संगे जाइत देखलहुँ ।

-27-

दिनभरिक धमाचौकरीसँ हम बहुत थाकि गेल रही । पूर्वजकेँ मुक्ति करबाक फिराकमे कहीं हमही ने मुक्त भए जाइ । कनिको सक्क नहि लागि रहल छल । सौंसे गयामे हमर प्रचार भए गेल छल । किओ हमरा अपना ओहिठाम रहए देबाक हेतु तैयार नहि छल । हारि कए हम पाकड़िक गाछक शरणमे चलि गेलहुँ ।

" अहाँ अनेरे बौआ रहल छी । सोझे हमरा लग आबि जएल करू ।"

"सोचने रही जे कोनो धर्मशालामे चलि जाइ मुदा सभ फटक बंद कए लैत अछि । सभकेँ हमरासँ डर होइत छैक ।"

"हम अहाँकेँ परेसान देखि सुग्गाकेँ पठओने रही ।"

"ओ तँ भेटल रहए । सरदार पंडाक हालचाल कहैत रहए।"

"आओर किछु नहि कहलक?"

"चर्चो नहि केलक ।"

"सएह कहू?"

"बात की रहैक?"

" बात की रहतैक । सरदार पंडाकेँ दलालसभ तत मारि मारलक जे ओकर अंतिम हालत भए गेल। संयोग एहन भेलैक जे महाकाल ओहि समयमे आएल रहथि । हम हुनका गोहरेलहुँ जे एकर किछु करिऔक । हमर बात मानि ओ सरदार पण्डाक जान बँचा तँ देलखिन मुदा इहो कहलाह जे ई बेसीदिन नहि चलत । बहुत तँ छ मासमे एकर छुट्टी भए जेतैक ।"

हम थाकल-ठेहिआएल पाकड़िक गाछ लग पहुँचलहुँ । ओ हमरा लेल चाह-पानक ओरिआन केने छलाह ।

"अहाँ ई सभ कोना केलिऐक?"

"ताहिसँ अहाँक कोन मतलब? चाह पीबू आ आराम करू। काल्हि देखल जेतैक ।"

सुग्गा अपन सासुर चलि गेल । रातिभरि हम आ पाकड़ि भाइ गप्प करैत रहि गेलहुँ ।

"सरदार पण्डा के छैक से बुझलहक?"

"हम कोना बुझबैक?"

"ई पूर्व जन्ममे श्याम छल । मरलाक बाद बहुत दिनधरि अंधलोकमे पड़ल रहल। ओहिठाम तिरपित भेटलखिन। ओएह जेना-ने-तेना एकरा पैरबी कए गया पठा देलखिन । मुदा चालि, प्रकृति बेमाए, ई तीनू संगे जाए । सएह एकरो संगे लागू होइत अछि। जेहने फँचाड़ि ई पहिने रहए, तेहने रहि गेल ।"

" सुग्गा कहि रहल छल जे सरदार पण्डा ओकर सासुरक लोक छैक ।"

से सुनि ओ हँसि कए कहैत छथि-

"एखन थाकल छह । सुति जाह । काल्हि गप्प करब ।

-28-

प्रातभेने हम फेर प्रेतशिला पहुँचलहुँ । ओतए पहुँचितहि कतहुसँ मधुर ध्वनि सुनाएल। किछु देखा नहि रहल छल । किछु बुझेबे नहि करए जे बात की थिक? खैर! आगू बढ़लहुँ । जँ-जँ प्रेतशिलापर आगा बढ़ैत गेलहुँ मधुर ध्वनि ततेक स्पष्ट होइत गेल । हमरा आगा-पाछा किओ कतहु नहि छलाह । मोनमे कनी-मनी डरो होइत छल कि सुग्गा देखाएल । हमरा जान-मे-जान आएल ।

"की बात छैक भाइ । परेसान लागि रहल छी ।"

"औ! कखनसँ मधुर ध्वनिक आबाज सुनि रहल छी मुदा किओ देखा नहि रहल अछि। काल्हि तँ बहुत रास प्रेतसभ एहिठाम घुमि रहल छलाह । कहि नहि आइ ओ सभ कतए निपत्ता भए गेलाह?"

"सभ अंधलोक चलि गेलैक अछि । ओहिठाम सभक हाजिरी हेतैक तकरबादे कतहु जा सकैत अछि । ऊपर जैओ ने सभटा अपने बुझा जाएत ।"

"कतेक ऊपर जइऔ । आब तँ डरो लागि रहल अछि ।"

"डर कथीक लागि रहल अछि?"

"से हम अपनो नहि बुझि पाबि रहल छी तँ अहाँकेँ की जबाब देब ।"

हमसभ गप्पमे लागले छलहुँ की पाकड़िक गाछ सहटल प्रेतशिलाक लगीचमे आबि गेलाह । पाकड़ि गाछकेँ देखि मोन हल्लुक भेल मुदा ई नहि बुझि सकलिऐक जे ई गाछ होइतहु एना केना चलि फिरि रहल अछि?

" किछु सुनि रहल छी कि नहि?"-पाकड़िक गाछ बजलथि।

हम जौँ -जौँ उपर जाइ मधुर ध्वनिक आबाज बढ़िते गेल। लागल जेना बहुत दूर किओ गाबि रहल अछि-" ओ जाने बाले हो सके तो लौट के आना......" सुग्गा ओहि गीतकेँ सुनि कए भाव विभोर भए गेलथि । मुदा हमरा चिंता होइत छल जे एहन करुणस्वरमे एहन बिरान जगहपर के गाबि रहल अछि ।"

हमर मोनक बात ओ तारि गेलाह ।

"अहाँ अपन काजपर ध्यान दिअ । आओर बातसभ साँझमे गप्प करब ।"

"ई कहू जे हमरा ने देह अछि ने कोनो अंग, ताहि हालतमे हम पिण्डदान कोना करबै?"

"ई बात जे आब फुरा रहल अछि से पहिने किएक ने सोचलहुँ । अहाँ जे छी से कोनो आइए तँ नहि भेलहुँ अछि ।"

"की बात छैक, आइ अहाँकेँ बहुत तामस भए रहल अछि?"

"तामस की होएत कप्पार । सासुर गेलहुँ जे कनी चैनसँ रहब । तीर्थो कए लेब । मुदा ओहिठाम तँ दोसरे लफड़ा भेल अछि । दलालसभ सरदार पण्डाकेँ पीट देलकै, तहिआसँ ओ रहि-रहि कए बड़बड़ाइत रहैत छथि । ककरा-ककरा ठीक करबै ।"

"बात तँ सही कहैत छी । बेसी परेसानी कइओ कए की होइत छैक? जे हेबाक सएह होइत छैक ।"

कनीक आगू बढ़लहुँ तँ काल्हिबला मौगीकेँ फेर ओहिना देखलिऐक । ओ सभ रातिभरि मंत्र-तंत्रमे लागल छल तैओ भूतक छाया ओकरापरसँ नहि हटल रहैक । हम आगा बढ़ैत गेलहुँ । सुग्गा पाकड़िक गाछक संगे हमरा मदति हेतु चलैत रहलाह । कहुना-कहुना कए हम प्रेतशिलाक शिखर धरि पहुँचि गेलहुँ ।

जेठक दुपहरिआ छलैक । टहाटही रौद छल । घामे-पसीने हम बेहाल रही । पाकड़िक गाछ अपन छाहरि चारूकात पसारि देलाह । सुग्गा सेहो गीत गाबए लागल-"पंछी जपए हरिनाम बिरिछ पर ।"

"हमरा नहि रहल गेल । भबा कए हँसी लागि गेल ।"

"की बात छैक भाइ! बहुत जोरसँ हँसि रहल छी ।"

"ई पराती गाबक समय छैक?"

"समयक हिसाब हमरा-अहाँपर थोड़े लागू होइत छैक?"

"से किएक?"

"जाबे हम अहाँ देहसँ बान्हल छलहुँ ताबे नेनासँ बूढ़ होइत रहलहुँ । सदिखन समयक प्रभावमे रहलहुँ । आब की होएत?"

"ई तँ अहाँ विचित्र बात कहि रहल छी, सुग्गा भाइ! "

"हमरा होइत छल जे अहाँकेँ अपन सीमा पता अछि।"

"आइ तँ अहाँ रहस्यात्मक बातसभ कए रहल छी ।"

"हदे भए गेल । हम तँ ओएह कहि रहल छी जे बस्तुतः हम-अहाँ छी । हमसभ समयक सीमाक ओहि पार छी । तेँ ने सौंसे गयामे किओ पिण्डदान करेबाक हेतु तैयार नहि भेल ।"

सुग्गाक बात सुनि-सुनि हमर माथ जोर-जोरसँ टनकए लागल । हम ठामहि बैसि गेलहुँ। हमरा अपसिआँत देखि सुग्गा हमर लगीचमे आबि गेलाह । पाकड़िक गाछक पातसभ जोर-जोरसँ हिलए लागल । हम किछु नहि बुझि रहल छलहुँ ।

-29-

रातिमे पाकड़िक गाछेपर रहि गेलहुँ । भोरे निन्न टुटल तँ सुग्गा पाकड़िक गाछपर बैसल हरिस्मरण कए रहल छलाह । चारूकातक माहौल हुनकर मधुर ध्वनिसँ मनोरम भए रहल छल । सूर्य भगवानक तेज भोर होइतहि प्रखर भए गेल छल । सुग्गाक भजन सुनि पाकड़िक गाछक पात-पात आनंदमे झुमि रहल छल । एहन नीक भोर सभदिन होअए । हुनकर भजन समाप्त भेलनि । ताबे किओ भफाइत चाह लए हाजिर भेल ।

"चाह पिबि लिअ ।"-सुग्गा बजलाह ।

चाहक संगे गप्प-सप्प सेहो शुरु भेल ।

"हमरा नहि बूझल छल जे अहाँ एतेक नीक गबैया छी ।"

"अहाँकेँ बुझले की अछि? " से कहि ओ भभा कए हँसि देलाह । हमरा लोकनिकेँ हँसी ठट्ठा करैत देखि पाकड़िक गाछ सेहो लाड़ि देलथि।

"की बात छैक? आइ भोरे-भोर बहुत प्रशन्न लागि रहल छी। लगैत अछि सासुरमे बहुत मान-दान भेल अछि ।"

"संयोगसँ हमर सारि आबि गेल रहथि । गप्प-सप्पमे समय नीकसँ कटि गेल ।"

"आब खोललहुँ ने असली रहस्य । तैँ एतेक मधुर गीत निकलि रहल अछि । "

"अहाँकेँ तँ बुझले अछि ।"

ओ हँसि देलाह । फेर हमरा दिस इसारा करैत कहैत छथि"

“अपन पिपही सम्हारू । हम एकरा कतेक दिन धरि धेने रहब?"

से कहि ओ दिव्यशक्तिसँ पूर्ण पिपही हमरा हाथमे पकड़ा देलाह । हम आश्चर्यचकित रही जे ओ एतेकदिन धरि ओकरा केना रखने रहलाह । हमरा तँ बिसरा गेल छल जे हमर पिपही हुनके लगमे अछि ।

प्रेतशिलाक शिखरपर पिपहीमे गजबकेँ चमक लागि रहल छल । हमरा मोन भेल जे एकर कोड नम्बर पाँच दबा कए देखैत छी । एक-दू-तीन तँ कए बेर देखि चुकल छी । हम सएह करैत छी। से करितहि हमरा मुँहसँ निकलि गेल -"अद्भुत,आश्चर्य! चारूकात अनेकानेक ग्रह.नक्षत्र,तारा मंडल सभक शृंखला ओतए निकलैत देखा रहल छल । दिव्यलोक,अंधलोक सहित तमाम ग्रह नक्षत्रसभ ज्योतिर्मय भए रहल छल । लगैत छल जेना समस्त सृष्टि एकाकार भए गेल अछि । एहन अद्भुत दृश्यक कल्पना हमरा नहि छल मुदा से हम सद्यः देखि रहल छी ।

तिरपित,शरद,श्याम,मंजुषा,रागिनी,निशा, ज्योतिषीजी, विमला, प्रभु,सभ एक-एक कए प्रेतशिलापर उपस्थित भए गेलाह।

आगू-आगू महाकाल चलि रहल छलाह । सभ मुक्तिक कामनासँ प्रेतशिलापर हाकरोस कए रहल छलाह। से देखि महाकाल जोरसँ हँसलथि।

"ककरा-ककरा मुक्त करबह? " -से कहि ओ जोरसँ ठहाका देलाह । जाबे हम किछु बुझि सकितहुँ ओ निपत्ता भए गेलाह ।

हम बहुत परेसान भए गेलहुँ । पिपही कोड नंबर ९ दबा देलिऐक । तुरंत कतहुँ सँ आबाज आबए लागल -

"ई अहाँक अंतिम प्रयास अछि । जँ फेर एना करब तँ ई पिपही स्वतः जाम जाएत।"

"हमरा पिपही नियमसभ बिसरा गेल छल । आब एहन गलती नहि होएत । "

लागल जेना एकाएक सभ किछु बिला गेल । हम पाकड़िक गाछ पर सुग्गा लग पहुँचि गेलहुँ ।

हमरा परेसान देखि पाकड़िक गाछ कहए लगलाह -

"हमरा बुझाइत अछि अहाँ बुते पिण्डदान नहि पार लागत।"

"हम अपनहुँ नहि बुझि पाबि रहल छी जे आब की करी, कोना करी? एतेक प्रयास कए प्रेतशिलाक शिखर धरि गेलहुँ । ओहिठाम तँ सौंसे सृष्टिए आगू आबि गेल । ककर- ककर पिण्डदान हम करब ।"

" अनकर गप्प छोड़ू । पहिने अपन पिण्डदान तँ करबा लिअ । "-हुनकर बात सुनि हम गुम्म पड़ि गेलहुँ ।

"पण्डोसभ सएह कहि रहल छथि ।"

"अच्छा जे हेतैक, से हेतेक । आब साँझ पड़ि रहल छैक। चाह-पान करू । आराम करू। काल्हि देखल जेतैक ।

ताबे गरम-गरम चाह आबि गेल । हम सभ चाह पिनाइ शुरु केलहुँ । एकाएक सुग्गा भभा कए हँसए लगलाह ।

"की भेल?"

"की कहू? हमर सारि तँ पछोड़ धए लेने छल । बहुत मोसकिलसँ एहिठाम आबि सकलहुँ।

"हम ई गप्प नहि बुझि पाबि रहल छी जे अहाँ सभ के छी? करवनो सुग्गा बनि जाइत छी। करवनो पाकड़िक गाछ भए जाइत छी । करवनो सासुर चलि जाइत छी । आखिर एकर रहस्य की छैक?"

“हमर सभक छोड़ू । अहाँ अपने के छी से बुझल अछि? हाथ-पैर किछु छनि नहि आ चललाह अछि पिण्डदान करए?- सुग्गा चौल केलक ।

-30-

साँझमे हम ,सुग्गा आ पाकड़िक गाछ गप्प-सप्प करैत रही।

"अहाँ दुनू अपन रहस्य किछु खोलबै कि संगे नेने चलि जाएब?"-हम पुछलिऐक ।

"अच्छा सुनू । ई बात बहुत पुरान अछि । हमर नाम छल रूप राय । भैयारीमे हम जेठ रही । हमर सभक पिता मुकुंदपुर

शहरमे मानल व्यापारी छलाह । सभ तरहेँ संपन्न रहथि । क्रमशः हम जबान भेलहुँ । हमर बिआह मुकुंदपुरक लगीचेमे एकटा बेस प्रतिष्ठित परिवारमे तय भेल । धूमधामसँ बिआह भए गेल । बरिआती बिआह करा कए आपस जाइत रहए । संगे कनिआ सेहो रहैक । मुकुंदपुरसँ कनीके फटकी सभ सुस्ता रहल छल । संयोगसँ एकटा महात्मा ओतए ध्यान करैत रहथि । बरिआती सभ किछु उकठपना केलक । महात्माजीक ध्यान टुटि गेल । ओ बहुत क्रुद्ध भए गेलथि । क्रोधसँ हुनकर आँखि लाल-लाल भए रहल छल । ओ तामसे व्यग्र छलाह । हमसभ हुनका बहुत नेहोरा केलहुँ मुदा ओ शांत नहि भेलाह। आ तुरंत हमरा श्राप दए देलाह" –

"तोरा लोकनिक दुष्टताक फल अवश्य भेटतौक ।"- महात्मा बजलाह । ओ कमण्डलसँ पानि निकालि कहैत छथि-

"आइ दिनसँ तूँ ठामहि पाकड़िक गाछ भए जेबह । "

ताबते कनिआ सामने आबि गेलि।

"सरकार माफ कए दिऔक । धोखासँ गलती भए गेलेक। हमसभ अहाँकेँ नहि चिन्हि सकलहुँ । हमरा उपर दया करू । हम एतेकटा जिनगी कोना काटब?"- से कहि नवकनिआ जोर-सोरसँ कानए लगलीह । महात्माजीकेँ दया आबि गेलनि ।

"हमर श्राप तँ आपस नहि भए सकैत अछि। एकरा पाकड़ि गाछ बनए सँ आब किओ नहि बचा सकैत अछि । तूँ दिव्यलोकमे राजनर्तकी भए ओतहि सुख करबह । कालान्तरमे तोहरसभक फेर भेंट होएत ।"

"हमरा सभसँ बहुत गलती भेल । हमर उद्धार कोना होएत?"-से कहि हम हुनकर पैर पर खसि पड़लहुँ।

"तूँ इच्छाधारी भए जेबह, इच्छानुसार अपन देह बदलि लेबह। जतए चाहबह आबि जा सकैत छह। कालान्तरमे तोरे गामक एकटा बच्चा तोहरसभक उद्धार करत ।"-से कहि ओ महात्मा लुप्त भए गेलाह ।

बरिआतीमे हाहाकार मचि गेल । ने ओतए बर छल ने कनिआ । बरक भाएक सेहो अता-पता नहि रहैक । देखिते-देखिते मुकुंदपुरमे एकटा पाकड़ि गाछक उदय भेल । तहिआसँ ओ गाछ गामक समस्त घटनाक जीवंत गबाह बनि अपन ऊद्धारक प्रतीक्षा कए रहल छल। ओकरा एहि बातक ध्यान नहि रहि गेल रहैक जे ओ बालक के अछि जे ओकर उद्धार करत । क्रमशः समय संगे रमि गेल । बात तँ विचित्र छलैके। पाकड़िक गाछ चलि-फिरि रहल छल। सुग्गामे सभटा चेतना छलैक । एहि हद धरि ओ बुझैत छल जे सासुर पहुँचितहि सभकेँ चिन्हि गेलैक । मुदा ओ तखन पकड़ा गेल जखन फेर सुग्गाक भेख धए सासुरसँ आपस होइत रहए ।

-31-

प्रात भेने हम फेर प्रेतशिला दिस विदा भेलहुँ । सौंसे गया घुमि गेलहुँ । किओ हमरा पिण्डदान करेबाक हेतु तैयार नहि भेल। पणडासभ तर्र दए हमरा चिन्हि जाइत छल । हमरा देखितहि ओ सभ चिकरए लगैत-"भागू! भागू! प्रेत घुमि रहल अछि ।"

चलैत-चलैत फल्गु नदी धरि पहुँचि गेलहुँ । ओहिठाम तँ खाली बालुए -बालु देखाएल। पानिक कतहु कोनो लेश नहि ।

बुझेबे नहि करए जे लोक एकरा नदी किएक कहैत छैक। आगू बढ़ैत छी । हुंजक-हुंज प्रेतसभ घुमि रहल छल । संभवतः पितृपक्ष प्रारंभ भए गेल छल । दूपहर होइत-होइत सौंसे फल्गु नदी भरि गेल। टस सँ मस होएब मोसकिल। पंडासभ अपन जजमानसभक संगे व्यस्त छलाह । मुदा हमरा दिस ककरो ध्यान नहि । अस्तव्यस्त,असोथकित बीच फल्गुमे ठाढ़ रही कि ककरो आबाज सुनाएल- -

"ओहि कात चलि जाह । ओतहि दसरथक पिंडदान भेल रहनि । तोरो काज बनि जेतह। बालुए-बालुए हम ओहिकात पहुँचैत छी । पण्डासभ तरह-तरहक मंत्र पढ़ि रहल छथि । कैटा पण्डा आपसमे झगड़ा कए रहल छथि ।

हम ओहिकात पहुँचले रही कि एकटा महात्माजी आँखि मुनने ध्यानस्त बैसल छलाह । हुनकर आँखि लाल-लाल छल । ओ पैरसँ माथ धरि भस्म रगड़ने छलाह । माथामे जटा साँप जकाँ चारूकात पसरि रहल छल । फल्गुक बालुपर कहि नहि करवनसँ ओ पड़ल छलाह । हम हुनकर लगीचमे गेले रही, हमरा बिना देखने ओ बाजए लगलाह -

" आबि गेलह । अएनहि छलह । हमर वचन वृथा नहि जा सकैत छल । आब तोरे हाथे सभक मुक्ति होएत ।"

"पहिनहि हमर अपन मुक्ति तँ होअए । "

"मूर्ख! एतेक दिनसँ बौआ रहल छह, एतबो नहि बुझि सकलह जे हमर आ आन किछु नहि होइत अछि । ई फाँक स्वनिर्मित अछि । सभ मुक्त हेतैक तँ तूँ बैसले थोड़े रहबह । स्वतः मुक्त भए जेबह।"

"अहाँ के छी? हमरा कोना जनैत छी ।?"

"लएह, फेर ओएह बात? जे कहैत छिअह से ध्यान सँ सुनह । एहिठामसँ दस डेग पच्छिम दिस जाह । एकटा तमघैल माटिमे गारल भेटतह । ओकरा लेने सोझे मझौल चलि जाह ।"

हम सएह करैत छी । दस डेग पाछू दिस जइतहि कनीक ऊँचगर जगह बुझाएल । ओकरा पैरसँ कोरिअबितहि एकटा तमघैल भेटल । ओ बेस भरिगर छल । बाहरसँ नीकसँ मुनल छल। कहुना कए हम ओकरा बाहर घिचलहुँ । ओकरा कान्हपर धरिते छी कि फेर आबाज भेल-

"एकरा अपन गामक सीमाक पार लए जाह । एहिमे सभक मुक्तिक समाधान अछि ।" पाछू देखैत छी तँ ओ महात्माक कोनो अता-पता नहि छल ।

पाकड़िक गाछ ओहि महात्माकेँ चिन्हि गेल रहथि आ चिंतितो रहथि जे कहीं हमहु हुनकर लपेटमे ने आबि जाइ। इएह महात्मा हिनकर ई गति केने रहथि । मुक्तिओ हुनके करेबाक रहनि। से रस्ता ओ हमरा देखओलथि । फल्गुक बालुसँ कहुना कए बाहर भेलहुँ । पाकड़िक गाछ आ ओहिपर बैसल सुग्गा भेटलाह। ओ सभ सभटा देखि रहल छलाह।

"आब एतए एकहु क्षण रुकनाइ ठीक नहि "-सुग्गा बजलाह ।

"सही कहि रहल छी "-पाकड़िक गाछ कहैत छथि ।

हम तमघैलकेँ सम्हारि कए रखैत छी आ हुनका सभक संगे विदा भए जाइत छी । तीनू गोटे रते-राती मझौल पहुँचलहुँ । गामक सीमक ओहिपार एकटा धार छल । धारसँ सटले परती छल । थोड़बे कालमे घनघोर बरखा होबए लागल । आब की करी? किछु फुरेबे नहि करए । एतबेमे आकाशवाणी भेल-

" मनुक्ख कतएसँ आएल आ कतए चलि जाइत अछि? ई प्रश्न हजारों सालसँ अनुत्तरित अछि । ई बात नहि छैक जे एकर समाधानक प्रयास नहि भेलैक । कतेको लोक अपन-अपन तरीकासँ एहि रहस्यक व्याख्या करबाक प्रयास केलाह । मुदा सही की अछि, ककर बातमे बेसी दम छैक से कहब बड़ मोसकिल काज अछि । जहिना जीवन सत्य अछि तहिना मृत्यु सेहो अकाट्य सत्य अछि । जे जन्मल से मरत । मुदा तकर बाद? की ओकर आस्तित्व सभदिनक हेतु मृत्युक संगे समाप्त भए जाइत अछि, आ की फेरसँ ओकर जन्म होइत छैक ? निर्णायक रूपसँ किछु नहि कहल जा सकैत अछि। पाकड़िक गाछ हो,ओहिपर बैसल सुग्गा हो किंवा तूँ स्वयं ,सभ स्वतःप्रेरित एहि संधानमे लागल रहलह । महाकालक प्रभावसँ कतए-कतए नहि गेलह । कोन-कोन परिस्थितिसँ ने गुजरलह । महाकाल महान छथि। हुनकहि प्रभावसँ सृष्टिमे रचना ओ संहारक शृंखला अनवरत चलि रहल अछि । चलिते रहत । परतीपर उगल नव पम्हसभ पौधक रूप धरत । सृजन मुक्तिदायक थिक । युग-युगसँ बौआइत मृतात्मासभ ओहि नव शृजनसँ एकाकार भए मुक्त भए जेताह।

तकैत की छह? एहि तमघैलमे राखल बीआकेँ सौंसे परतीमे छीटि दहक । एहीमेसँ बौआइत आत्मासभक मुक्तिक रस्ता निकलत । ओकरसभक रुपांतरण भए जेतैक । नूतन किशलए बनि ओ सभ सृष्टिमे सुख ओ समृद्धिक आकार ग्रहण करत। "

से सुनि हमर आँखि प्रशन्नतासँ चमकि उठैत अछि । हम सएह करैत छी । तमघैलकेँ खोलि दैत छी । ओहिमे राखल बीआकेँ सौंसे परतीमे छीटि दैत छी । देखितहि-देखितहि संपूर्ण परिदृश्य

बदलि जाइत अछि । सौंसे परती हरिअर कंचन लगैत छल । युग - युगसँ बौआइत अतृप्त,अशांत आत्मासभकेँ शांति भेटैत अछि,ओ सभ नव रूपमे अंकुरित भए सृष्टिमे सुख ,स्मृद्धिक प्रतीक बनि जाइत छथि ।

सगतरि नूतन जीवनक सृजन भए गेल छल । हमर अन्तरदृष्टि जागि चुकल छल । हम आब नीकसँ बुझि गेलहुँ जे सभ किछु मोनेक फेर अछि । दिव्यलोक,अंधलोक सभ मोनेमे अछि। जेहन सोचबैक तेहने भए जाइत अछि । एकहि मोनमे की-की ने बसैत अछि । जाधरि हम अपनासँ हटि कए नहि सोचबैक ताबते बौआइते रहब । तेँ तँ हमरा नीलमणि पर्वतपर सभ किछु देखा रहल छल , कारण हम तखन सभ किछुसँ पृथक भए जाइत छलहुँ । दृष्टि जँ सोझरा गेल तँ इजोते-इजोत नहि तँ सूर्यग्रहण जकाँ दिनोमे अन्हार। दिव्यलोक जीवनक सकारात्मकताक परिचायक थिक जाहिसँ शांति,सुख आओर आनंदक अनुभव होइत अछि । अंधलोक नकारत्मकताक प्रतिरूप अछि । ओहिठाम अशांति,दुख आओर तनाव भरल रहैत अछि । अंधलोकसँ दिव्यलोकक यात्रा “तमसो मा ज्योतिर्गमयक” कल्पनाकेँ अनुशरण करैछ। ऐहि यात्राक हेतु स्वयंकेर स्वयंसँ साक्षात्कार जरूरी अछि । मनुक्ख अपन सोचक आंतरिक प्रवृतिकेँ बदलि कए जीवनक दिशा स्वयं निर्धारित कए सकैत अछि । इहो बुझबामे आबि गेल जे आखिर पिपही आओर किछु नहि हमरे निर्णनयात्मक वुद्धि अछि जकरा बले हम किछु प्राप्त कए सकैत छी । एही बलेँ पाण्डव महाभारतक युद्ध जीति गेलाह । एकरे अभावमे रावण सन महाबली सभकिछु हारि गेल । पिपहीक कारण सुविधा,असुविधा दुनू भेल । हमरा जनैत असुविधा बेसी भेल । नहि तँ भने हम रेल दुर्घटनाक बाद

फसादसभसँ हटि गेल रही । मुदा नियति नव-नव समस्या गढ़ैत रहल । दिव्यलोक,अंदलोक, मुकुंदपुर,मौजपुर आ कहि नहि कतए कतए घुमबैत रहल,की-की देखबैत रहल । हम ओकर हाथक खेलौना छलहुँ, आओर किछु नहि। तैँ ने मरिओ कए कहिओ चैन नहि रहि सकलहुँ ।

फरीछ भए रहल छल । गाममे स्त्रीगणसभ पराती गाबि रहल छलीह । हमरा लेबाक हेतु एकटा विमान आएल । ओहिमे पहिने सँ तिरपित,शरद,श्याम,मंजुषा,रागिनी,निशा, ज्योतिषीजी,विमला,प्रभु,सभ बैसल छलाह । ओहि विमानक परिचालन महाकाल स्वयं कए रहल छलाह । सभ भूत,वर्तमान,भविष्यक ओझरसँ मुक्त भए गेल छलाह ।

-32-

ओहि राति हमरा बहुत नीक निन्न भेल । एकहि निन्ने परात भए गेल । निंद्रित अवस्थामे भोरहरबामे सपना देखए लगलहुँ । सपना सीनेमाक रील जकाँ बड़ीकाल धरि चलैत रहल । कहि नहि कहाँसँ पाकड़िक गाछ आ ओहिपर गप्प करैत सुग्गा आबि गेल । मौजपुरक परतीक हरिअरी देखि हम कतेक प्रशन्न भेल रही । कै बेर हम बड़बड़ाइतो छलहुँ । लगमे किओ नहि छल। एकाएक फोनक घंटी बाजल । मोबाइलक घंटी सुनि हमर आँखि खुजि जाइत अछि । कतहु किछु नहि देखि हम विस्मित छी । ने आब पाकड़िक गाछ छल ने सुग्गा कतहु देखाएल । कनीकालमे जखन भक्क टुटैत अछि तँ पता लागल जे ई तँ मात्र सपना छल। एकटा एहन सपना जे हमर मोनकेँ झकझोड़ि कए राखि देलक।

कोना हम कै पुस्त पहिनेक दुनियाँमे पहुँचि गेलहुँ ? मुकुंदपुरमे राजकुमारी संगे हमर फेरसँ भेल भेंट केहन सोहनगर लगैत छल । पूर्वजन्ममे ज्योतिषीजी आ विमला हमर माता-पिता छलाह से बात सोचि तँ हम अखनो रोमांचित छी । असलमे जन्म-जन्मक संवंध चलैत रहैत अछि जे हम कै बेर बुझि नहि पबैत छी आ आश्चर्यचकित होइत रहैत छी जखन किओ अप्रत्याशित हमर शत्रु-मित्र बनि जाइत छथि । ओहोसभ अपन पूर्व जन्मक बकिऔताक समाधान करैत रहैत छथि ।

भोरे-भोर हम इएहसभ सोचि रहल छलहुँ कि फोनक घंटी बाजि गेल छल । रागिनी फोन पर रहथि । कहैत छथि- "बाबूजी हमरसभक बिआह हेतु स्वीकृति दए देलथि ।"

"तखन?"

"तखन की । शुभस्य शिघ्रम ।"

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण pothi.com क निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.
मातृभूमि(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198699.

The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।